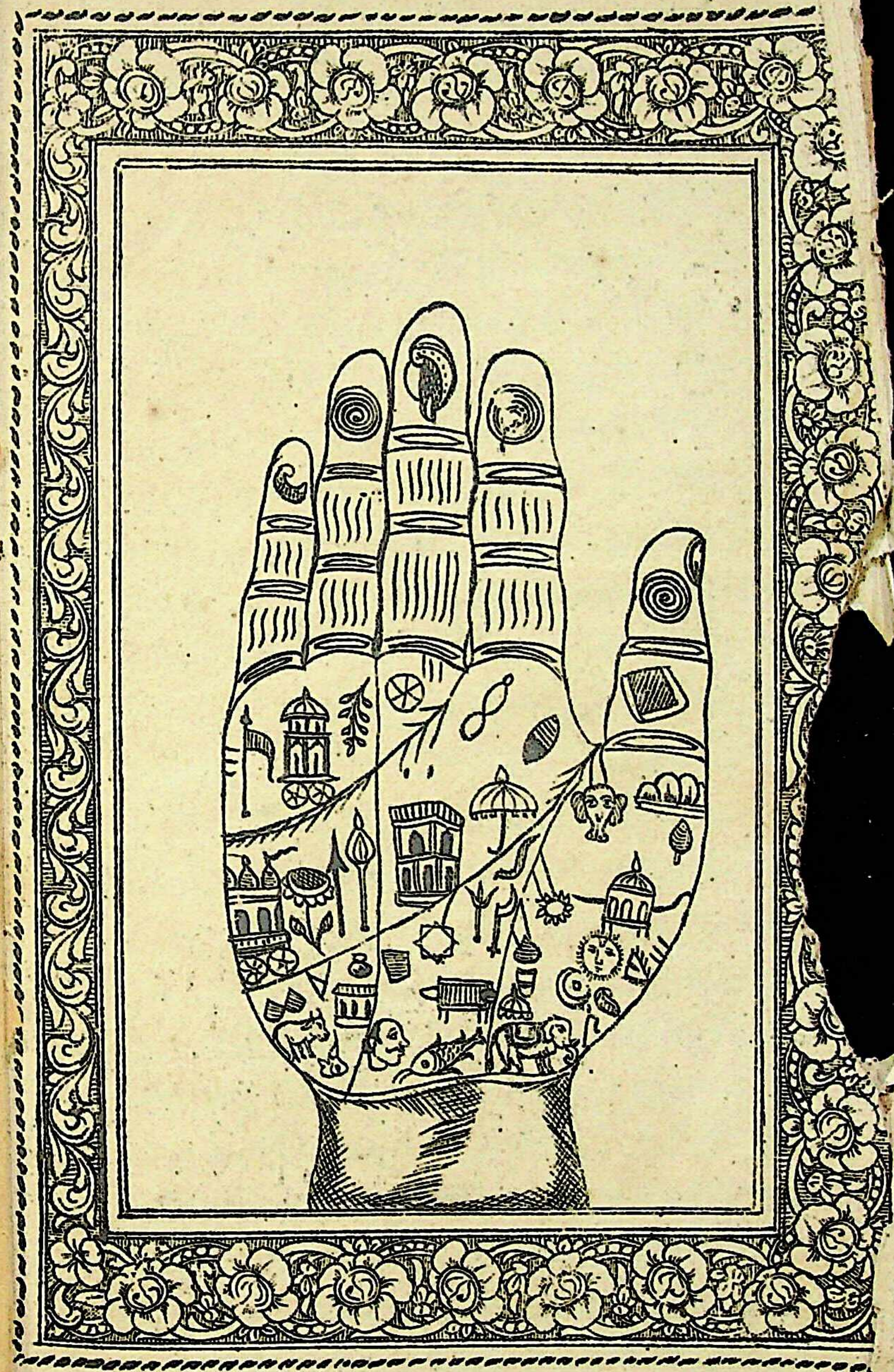
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham



CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सामुद्रिक

श्रीगणेशाय नमः

श्रीसत्कवी यदुनाथोक्त पतिग्रंथ सामुद्रिकं ॥ इह ग्रंथके देखने
यों संपूर्ण जन्म का हवाल मालूम होगा ॥ आयुर्ज्ञान होगा ॥ कि
तना वर्ष जीवन होगा सो ज्ञान होगा जो जो सुख किम्वा दुःख
होनेवाला जो जो वर्षमों होनेवाला है सो ज्ञान होवेगा कितनाई
सकलपुत्र होगा किम्वा कन्या होगी किम्वा नपुंसक होगा वन्ध्या होगा
सो सब हाल लिखा ज्ञान होगा जितनी स्त्री सों भोग है सो हाल मालूम
होगा राजा होनेका चिह्न प्रजा होनेका चिह्न ॥ पण्डित होनेका चिह्न ॥
मूर्ख होनेका चिह्न ॥ साधु होनेका चिह्न ॥ चोर होनेका लक्षण ॥ सुखी
दुःखी पापी पुन्यमा होनेका सब हाल मालूम होनेके वास्ते नाना प्रका
रके संपूर्ण चिह्नका हाल लिखा जो है सो जानने वास्ते बड़ी परि
श्रम करके यह ग्रंथ संग्रह होगया है ॥ इह ग्रंथ बड़ो दुर्ल
भ है सो संपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने वास्ते प्रगट हुआ है इसमें
में बहोत प्रकार ज्ञान होगा सो इह जानने के ॥ श्री महादेवजी है
भगवान सों प्रश्न करे हैं ॥ कि हे प्रभु पुरुष का लक्षण ॥ स्त्री
लक्षण यथा वित अपरूप कहके हमसों कहो यो लक्षण
चिह्न के जाननेसों शुभ अशुभका परिज्ञान संपूर्ण प्रजा मात्र
का होवे सो विस्तार पूर्वक कहने सो प्रगट अर्थ किजीये ॥ यह प्रश्न
को विनय पूर्वक वाक्य श्रवण करके श्री भगवानजी उत्तर देहै
॥ सोई इह ज्ञानके वास्ते कैलाशपे पार्वतीजू श्रीमहादेवसों ए
क समय में प्रश्न करके पूछे है ॥ कि हे प्रभु तुम्हारे मुख कमलते ना
ना प्रकार वार्ता श्रवण किये हैं परन्तु हमपर दया प्रकाश करि
के स्त्री पुरुष के चिह्न हमसों कहो याते संपूर्ण प्राणियों का शुभा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शुभ मात्र का परिज्ञान होने सो ई इतान कहे तव श्रीशिवजू
पार्वती देवी जी सों कहे हैं कि हे प्रिये मिथिराजनंदिनी तुम बडे
उपकार का इतान्त प्रश्ना किये हो सो प्रश्ना के उत्तर सुनो॥ प्रथ
म हस्त के चिह्न के प्रकार हम कहे हैं सो सुनो॥ ॥ पुरुष
के दहिने हस्त में शुभ अशुभ का देखने वाला रेखा की परीक्षा
देखने में संपूर्ण जनों का शुभ अशुभ का ज्ञान होवे है स्त्री के
वाम हस्त में संपूर्ण रेखा के मध्य में शुभ अशुभ सुख दुःख आ
युर्जन्म मरण का हाल देखने में मालूम होवे है सो सामुद्रिक शा
स्त्र में भगवान जी ब्रह्मा सों कहा है सो ई प्रमाण हम कहे हैं सो म
न चित दे के हम सों सुनो॥ श्रीमहादेव उवाच श्रीशिवजी कैला
श पर्वत पर कल्पवृक्षतले बैठ के श्री पार्वती भगवती जी सों संपू
र्ण जीव का शुभ हस्त के चिह्न सों पहिले रेखा विचार कहे हैं अ
तः संप्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणं॥ दक्षिणे पुरुषे ज्ञेयं वामे वामा
शुभं १ अर्थ अब प्रथम हम हस्तरेखा के विचार कहे हैं सो सुनो
दहिने हस्त के मध्य पुरुष के लक्षण देखेंगे वामे हस्त के मध्य में स्त्री के
लक्षण विचार करेंगे॥ हस्त की रेखा में संपूर्ण जीव के जन्म मात्र का शु
भ अशुभ का हवाल लिखा है विधाता ने सो ई फल होगा अब पुरुषा
ग्रहे पार्वती जी हम सत्य कहे हैं॥ जैसे श्रीमंत बडे राजा के पत्र सो
जाके शुभ बोध पत्र पर बाना सों प्रजा लोग अपना ऐश्वर्य संगा को देहै
वैसे ही परमेश्वर का आज्ञा सों जो कर्म का हस्त सों ब्रह्मा जी रेखा मध्य शुभ
अशुभ फलों को लिखो है सो सुनो १ श्लोक॥ लिखितानि सामुद्रिकरेखा
शुभाशुभं यस्य विज्ञानमात्रेण पुरुषो नहि शोचति २ अर्थ श्रीशिव भग
वानजी कहे हैं इन सामुद्रिक शास्त्र सों हस्त की रेखा का शुभ अशुभ
सुख दुःख के हवाल लिखा है या हस्त रेखा के देखने सों सुख
दुःख को ज्ञान होने सो पुरुष ज्ञानवान होके शोक को त्याग करे

के सुखी होवे है २ श्लोक यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च
जायते धनाढ्य पशुसुखविज्ञे यो बहुपुत्रो न संशय ३ अर्थ या
के हस्त के मध्य पहुंचे के बीच मध्ये प्रथम रेखा सो मीन मच्छी के
समान प्रगट रेखा होने सों मीन का रेखा वाला प्राणी इस संसार में
जो व्यापार करेगा सो सब में प्राप्ति होगा धनवान होगा सुखी होगा
संसार में बडा मान्य होके जीवन पर्यन्त नाना प्रकार सुख भोग
को करेगा या में नहीं संदेह ज्ञानना अब पुरुषों मीन चिह्न हस्त वाले सु
खी होते हैं निश्चय यह वृत्तान्त को जानना योग्य है २ श्लोक
तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते॥ तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात् पुरु
षस्य न संशयः ४ अर्थ या प्राणी के हस्त के मध्य रेखा के बीच
में तुला नाम तराजू ई॥ तौल करे का पात्र तुला डण्डे तराजू ई
का चिन्ह पडे होवे॥ किम्वा हस्त मध्ये ग्राम नगर के सदृश चतुष्को
ण के रेखा के मध्य विचित्र चिन्ह प्रतीत होवे ग्राम के समान॥ कि
म्वा वज्र का चिन्ह पडि प्रतीत होवे किम्वा तीनों एक हस्त मध्ये
हैं अथवा कोई रेखा मध्ये हैं ने सो यह फल होवेगा कि वह प्राणी
॥ तुला चिन्ह वाला ग्राम चिन्ह वाला वज्र चिन्ह वालों का एक मु
ख्य फल ए हो है कि जो जो वाणिज्य कर्म संसार में प्रसिद्ध हैं सो
सो सब वाणिज्य कर्म करेगा वाणिज्य द्वारा धनवान होगा सुखी
भी होके जीवन पर्यन्त आनंद में रहेगा ४ श्लोक पद्मचाप
विवेद्रुचक्रषट्कोणादि दृश्यते॥ स्त्रियश्च पुरुषो वापि धनवान् सु
खी नरः ५ अर्थ या प्राणी के हस्त मध्ये प्रगट चिन्ह पद्म क
मल दल के प्रतीत होवे किम्वा चाप नाम धनुष का चिन्ह हो
वे किम्वा वेद्र गरुड का चिन्ह होवे किम्वा अष्टकोण का चिन्ह
होवे स्त्री का किम्वा पुरुष का सो धनवान सुखी होगा यम चिन्ह
राजा रानी होवे वा अथ धनुष चिन्ह सों धनुषधारी बडो वीर है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

यतेनरवार के चिन्ह होनेसों वडो सेना को बलवन्त होवे ॥ अ
ष्ट कोण के त्रिकोणसा नावडो वलवन्त सो पाही होवे ॥ अष्ट को
ण के चिन्ह होने सो भूमपालक जमीदार ग्रामपति होवेगा सब
प्रकार के अश्रपती होवेगा ५ श्लोक चक्रं शंखं ध्वजाकारै
नाम्नाकारैच हस्तके ॥ सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिमान् सम्भवेन्न
रः ६ अर्थ याके हस्तमध्ये चक्र का चिन्ह होवे सों पंडित अ
च्छी होने का लक्षण है ॥ यदि शंख का चिन्ह हस्तमध्य होवे तो
विद्यावान शास्त्रज्ञ होवे ॥ यदि ध्वजा के चिन्ह होवे तो वेदज्ञ
वेदवेदान्त के ज्ञाता होवे यदि हस्तमध्य मासा का चिन्ह दृश्यमान
होवे तो सामान्य संसारिक व्यापार विद्या मो निपुन होगा यदि इह
संपूर्ण चिन्ह हस्त मो रहे तो संपूर्ण षट्शास्त्र चार वेद अठार
ह पुराण के वक्ता पंडित धनी माननीय सुखि होगा ६ श्लोक
त्रिशूलं करमध्ये तु तेनराजा प्रवर्तते यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विज
प्रपूजते ७ अर्थ यदि कोई पुरुष का किम्वा स्त्री के हस्त
मध्ये त्रिशूल का चिन्ह प्रतीत होय तो राजा होने का चि
न्ह है ॥ प्रगट शुद्ध त्रिशूल होने सों अवश्य राजा होहै यदि
त्रिशूल मे कछु संदेह है शुद्ध प्रगट न हो मालुम होवे तो रा
जा के आश्रय होके राजभोग को करेगा ॥ राजा होके किम्वा
राजा के पार्श्ववर्ती होके नाना प्रकार के यज्ञ करेगा ॥ धर्मात्मा
होगा दान के करेगा दाता उपकारी होगा गऊ ब्राह्मण देव
माता पिता गुरुजनो के सेवा पूजा सन्मान करेगा धर्मशील सु
शील धनी गुनी का सन्माननीय होगा त्रिशूल हस्तवाले का व
डा प्रताप लोक मो विख्यात सुजस होवे है ७ श्लोक प्रा
ति तोमर वाणाश्च करमध्ये तु दृश्यते ॥ रथ चक्र ध्वजा वा
ऽश्व राज्य लभेन्नरः ८ अर्थ यदि स्त्री का पुरुष का हस्त म

ध्ये कोई स्थान मो शक्ति वरछी का चिन्ह होवे अथवा तोमर खे
डा के राहस कछुक विलक्षण मूठी मो हस्त प्रवेश का योग्य तो
मर नाम कर बहुआ कार प्रतीत होवे किम्वा वाण का चिन्ह हस्तम
ध्ये प्रगट मालुम होवे तो ॥ यही तीनो चिन्ह के फल प्रगट तो वडो अष्ट
राज को प्राप्ति होवे है यदि एक भी चिन्ह होवे तो सामान्य राज्य भो
ग को प्राप्ति होगा दो चिन्ह हस्त मो होने तो राज ऐश्वर्य को भोग करेगा ॥
संसार मो वडो आनंद भोजन मय पान सुखी मानी धनी गुनी
होके सदा आनंद सुख से रहेगा ८ श्लोक अंकुशं कुंडलं च
क्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥ तस्य राज्यं महाश्चेष्टं सामुद्र वचनं य
था ९ अर्थ कोऽ पुरुष का हस्त मध्ये यदि अंकुश का चिन्ह
होवे ॥ किं वा कुंडल का चिन्ह हावे अथवा चक्र का चिन्ह होवे तो
॥ तीनो चिन्ह के प्रतीत होने सो महाराजा चक्रवर्ति राज्य भोग को
प्राप्ति होगा यदि एक चिन्ह होवे तो सामान्य राज्य भोग होगा यदि
दो चिन्ह होवे तो कछु विशेष राजधन ऐश्वर्य भोग करेगा श्री
समुद्र ऋषी नारायण का वचन है सत्य या मे संदेह नही करना
तीनो चिन्ह होने सों अवश्य क महाराज चक्रवर्ति भुपालना
म होके संपूर्ण भूमी को पालन कर्ता उत्यम राज्य के करनो मे
ख्याति प्राप्त होगा ९ श्लोक गिरिकंदरयोनीनां नरमुंड
घटादिकं ॥ करे वै यस्य चिन्हानि राजमंत्री भवेन्नरः १० अ
र्थ याके हस्त मध्ये गिरि नाम पर्वत के चिन्ह किं वा कंदर
का चिन्ह ॥ हस्त मध्ये होवे किं वा योनि के चिन्ह होवे यदि न
र मनुष्य का मुंड के चिन्ह होवे ॥ अथवा घट नाम कलश के
चिन्ह होवे ॥ हस्त मो प्रगट जानीते यदि दि होई तो जानना की
राजा के मंत्री दीवान राजमान्य राजद्वार के प्रधान होने के
लक्षण है ॥ यही तीनों चिन्ह से राजमंत्री होवे है अवश्य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

का ११ श्लोक सूर्यचन्द्रलतानेत्रअष्टकोणत्रिकोणकं
मंदिरगजअश्वनांचिन्हधनीसुखीनरः ११ अर्थ यदि
हस्तमध्ये सूर्यकाचिन्ह होवे किं वा चन्द्रमाके चिन्ह होवे अथ
वा लतावरके चिन्ह होवे किं वा नेत्रका चिन्ह होवे किं वा अष्ट
कोणका चिन्ह होवे॥ यद्हस्तमध्ये त्रिकोणका चिन्ह होवे य
द्धि मंदिरके चिन्ह होवे यदि हस्ती हाथीके चिन्ह होवे तो हस्ती
द्वारे के ऊपर रहेगा यदि अश्व घोडाके चिन्ह होवे तो घोडा
द्वारपर बहुत रहेगा यह संपूर्ण चिन्ह हस्तमो रहने सों बडो ध
नाढ्य राजा प्रीथिपालक होके सुखी मनुष्यलोकमो रहेहै
१२ श्लोकं अंगुष्ठोद्भमध्ये स्थो यवो यस्य विराजते उत्पन्न
भव भोगी स्यात् सनरः सुखमधते १२ अर्थ या प्राणीके
अंगुष्ठके ऊपरमो मध्य रेखाके बीचमो यदि यवका चिन्ह
होवे तो यह संसारमो विद्यावान गुनी ज्ञानी वड्डिमान धनी होके सुखी
होगा॥ जन्म भरमात्र मे मरण पर्यन्त सब सुखभोग करेगा या
संदेह नहीहै १२ श्लोकं मध्यमातर्जनीमूलेयवो
भुव चहश्यते धनवानसुखभोगी भुयात्पुत्रह्यरगृह
षु १३ अर्थ याके हस्तके मध्यमा अंगुलीके मूल
नीचेके रेखाके मध्ये यदि यवका आकार द्दश्यमान होवे
तो धनपति सुखी होवे किं वा तर्जनी नाम अंगुष्ठके स
मीपके अंगुलीके नाम तर्जनी कहेहै ताहि तर्जनी अंगुलीके
के मूलनाले रेखाके मध्ये यवका चिन्ह प्रतीत होवे तो धनेशु
णीमाननीय सुखी लोकमो प्रसिद्ध होके विलास करेगा
बहुत पुत्र होगा तसुंदरी स्त्रीसोंभोग विलास करके बडे
भाग्यवंत होके जीवन पर्यन्त आनंदसों रहेगा यामो नसंदे
हक नोसत्य होइतातलोकमो देखा जाता है सुणो जनो

सोनिश्चय मालुम होता है १३ श्लोक अनामिकापूर्व
रेखले कनिष्ठादिक्रमेण तु॥ आयुर्दशवर्षाणि सामुद्रवच
नं यथा १४ अर्थ यदि कोई प्राणीका हस्त मध्ये कनिष्ठ का अं
गुलीनाम छोटी अंगुलीकी पूर्व भाग जडतक लेके आयुरेखा हो
नेसे दशवर्ष पर्यन्त आयु जीवन का लक्षण अपुरेखामो प्रती
त होहै यदि रेखाके मध्यमो कोई रेखा टूटगया होय तो बीचमे फेरु
का होय तो जलमध्ये डूबने का लक्षण सुचना होता है यदि आयु
रेखामे ऊपर से चटके रेखा नीचे रुकी होय तो वृक्षसे किंम्वा कोठा
तें ऊंचे से नीचे गिरने का सूचन देखावता है यह श्रीसागर सापी
भगवान यहां सों कहेहै मृत्युतंति पानन्ता॥ यदि कनिष्ठका अंगुली
का मूलसे आरंभ अनामिकामूलपर्यन्त एक रेखा पूर्ण आह्ण वा पोल
ल वही रेखा शुद्ध मालुम होय तो एक सु मनीश वर्षका आयु रेखा सु
चनकरेहै १४ श्लोक अंगुष्ठ यवा रुद्धरेखावर्तते शुभा सेना
यति धनेशश्च मध्यमा पर्वते रा भवेत् १५ अर्थ याके हस्त
के अंगुष्ठ वडे अंगुलीके ऊपर चढके यदि ऊर्द्ध गामी रेखा प्रतीत होवे
तो जानिये कि बडो उत्तम राजराजेश्वरका चिन्ह है बडो सेना
पति राजा होवेगा बडो सेना फोज लसकरके मालिक होगा ऊ
ह राजाके संगमो डंका निशान डंडा पताका अनेक दल योद्धा
के संगमो नाश करेके महाराजा बडो ऐश्वर्य धनभोग को करके
प्रथ्वीमो रहेके पचास पांच पचपन वर्ष किंम्वा साठ वर्ष ६०
आयु जीवन प्रमाण रहिके मनुष्य का भोग संपूर्ण हू भाग करके
उत्तम तीर्थमो शरीरत्याग करेगा १५ श्लोक तर्जनीमूल
पर्यन्तमुद्धरेखा च दृश्यते राजदूतो भवेत् स्यधर्म नो पजा पते
१६ अर्थ तर्जनी नाम बडे अंगुली लोके समीप मोरहे सेवा
लीतर्जनी नाम अंगुलीके मूल जडतले यदि ऊर्द्ध रेखा मिणका

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गठमनीमहोवेतोराजदूतहोनेकाचिन्हहै॥ जिपाहीहोकेहस्त
मेंरेखायवाग्रपूर्वकनानाप्रकारकाराजकीयवातीहरण
ले आवनेकाअधिकारसोप्राप्तहोगाजोवनपर्यंतराजकीयक
र्मकरतेरीयोव्याघ्रचंचलहोकेस्वस्थनहीं होनसोआपनावर्णा
श्रमकेयथावतउचितधर्मकर्मकाचछासोरहितहोकेसं
सारमोयतकिंचितविषयभोगकरकेशरीरत्यागकरेगा १६
श्लोक मध्यमामूलपर्यंतंमदूरेखा वहत्पुत्रपूत्रयोश्चादि
समन्नोधनवानसुखीनरः १७ अर्थ याकेहस्तमध्येऊर्द्ध
रेखाकेचिन्ह३ ठके चलाऊपरकेमध्यमाअंगुलीकेमुलजड
तलेमिलकेप्रगटसोंप्रतीतहोतोसोप्राणीसंसारमोंआपनेवंश
मरमोवडेभाग्यवानहोगावहुतपुत्रवंतहोगावडेधनीहोगा
वडेसुंदरीस्त्रीसोसंगरहेगावडोसुखसंपतिभोगकरेगायह
लोकमोवडोमाननीयमनुष्यकीर्तिवंतभाग्यवंतनामप्रगटक
रकेलोकमोवडोआनंदसोंभोगविलासकरकेजीवनपर्यंत
आनंदसोरहेगा १७ श्लोकं अनामिकायामूर्द्धरेखा याव
सायेधनागमः सुखदुःखेनजीवेपुत्रयोअगृहाधिप १८ अ
र्थ याप्राणीकेहस्तमध्येप्रथमपहुंचेकेजडतेआरंभहोकेऊ
ठकेऊपरकोचलकेपहिअनामिकाअंगुलीकेमूलपर्यंतमि
लकेप्रगटप्रतीतऊर्द्धरेखाहोनेसोव्यवसायरोजगारनानाप्र
कारकेव्यवहारकेसंयोगकरकेधनसंचयकरकेशरीरमो
किंचितसुखकिंचितदुःखभोगकरतेहुयेलोकमारहेगाअ
त्यंतधनाढ्यनहिहोगाअत्यन्तदरिद्रीभीनाहीहोगापरन्तुम
ध्यमअवस्थावंतहोकेसुखदुःखसोंनिर्वाहमात्रकरतेहोवेलो
कमोरहेगा १८ श्लोक पथ्यपाणुर्द्धरेखा तु कनिष्ठामूल
संस्थिता तेनराः यदेषु शुभानमायलंभनीते १९ अर्थ या

प्राणियोंकाहस्तसोंपहिकनिष्ठकाअंगुलीकेमूलअडतले
ऊर्द्धरेखाकेचिन्हमिलकेप्रतीतहोवेतोकनिष्ठाअंगुलीकेउ
द्देरेखावासोंएकशतसौ१०० वर्षलोकमोशरीररहकेपरदेश
मे. वाखकरकेआपनाजीवकाकेकारनेहुवेशरीरकानिर्वा
हकरेगा १९ श्लोक दीर्घादानपथ्यायमें यद्वीसुख
मेवचविद्यामानोनयमानचअंगुल्यामूलसंस्थिता २० अ
र्थ कारणीअंगुलीकेमूलमोंयदिरेखाहोवेजितनासंख्याम
तनेतोप्रतीतहोतेसोसवकेफलएहाहैकीवडीदीर्घाय
शकर्ताहोवेएकरेखासोदानापरोपकारीहोवेदोयदोरे
खासायथावतधर्मशीलमानतोपपूजनेयज्ञादानवानत्रीतीय
रेखाकेफलसोप्रतीतहोवेहैवडोऐश्वर्यराजभोग्यवडो
महिमामहत्वकोप्राप्तहोकेसुखसंपतिकेप्राप्तहोहैचतुर्थ
रेखाकनिष्ठाअंगुलीकेफलमोदेखाजाहै॥ वडोविद्या
वानपंडित ज्ञानबुद्धिमानलायकपंचमरेखाकेमध्येमो
फलदेखितहोवेहै यालोकमेवडोमाननीयपुरुषोसरदा
रचौधरीग्रामकेसभामोमाननीयकोप्राप्तहोनेकोचिन्हहैषष्टयेरे
खाकेमध्यमोसुखफलप्रतीतहोवेहै पहिरेखाशत०होवेतो
तपस्वीसन्यासीकेभोगहोगावडोसुखोधनीनहीहोगापरंतलो
कमोआवसोभीवहुतपावेगायहनाएयणवज्ञानामोंकहेहैंकि
अंगुलीकनिष्ठाकेमुलमोसंपूर्णप्राणियोंकाजनममात्रका
सुखदुःखभोगविभवज्ञानश्रीअज्ञानीयोंकालक्षणरेखा
सोप्रतीतहोताहैसोइरेखामध्येव्रह्माजूप्राणियोंकाभो
गकोंलिखदियाहै २० श्लोकं कनिष्ठामुलसंयुक्ताश्चि
ह्नरेखायदृष्यते एकं पुत्रंत्रितयं च चतुर्थे वाणसप्तम
२१ अर्थ याप्राणीकेहस्तकेकनिष्ठाअंगुलीकेमूलज

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उतले यदि तीन रेखा के चिन्ह प्रतीत होवे तो अर्थ धर्म काम ये ह
तीनों पदार्थ भोग करने का चिन्ह है यदि एक रेखा होवे तो ध
नी होवे दो रेखासों धर्मात्मा होवे तीन रेखासों बड़े भोगी भो
गकर्ता होवे चार रेखासों बहुत स्त्री के भोगकर्ता होवे पांच रेखा
सों ज्ञानी मानी यशस्वी बुद्धिमान होने का चिन्ह है कनिष्ठा
अंगुली के मूल तक उन्ह के रेखा होने सों जइ रेखा होवे तो स्त्री भो
गकी रेखा सों प्रतीत होता है यदि स्त्री के वाम कनिष्ठा मध्य मलत
ले जइ रेखा ऊपर कोन उन्ह के प्रतीत होवे तो बहुत ही पुरुष का संग
करणे का यश प्रतीत होवे है २१ श्लोक आपुर्बलमवेद्रेखा
तर्जनी मूलसंस्थिता॥ शतवर्षमवेदायुः सुखेनित्यं न संशयः
२२ अर्थ यह संसार में सम्पूर्ण प्राणीमात्र के कनिष्ठा अंगुली के
मूलतले जो रेखा का चिन्ह प्रतीत है वाही रेखा के चिन्ह सों आयु
म होता है कि सुखी दुःखी जनमरण आयु का ज्ञान प्रतीत होवे
यदि कनिष्ठा के मूल में चलके तर्जनी अंगुली के तो मूल में जाई
के मील के प्रतीत होने सों एक शत १०० वर्ष का आयुरेखा सों प्रतीत
होता है वह प्राणी सुखी है के प्राण त्याग करेगा या लोक में सुखी ही
के है॥ यदि मध्यमा के मूल तक रेखा है तो असार ७० पांच पचहत्तर
७५ वर्ष के आयु का चिन्ह रेखा सों प्रतीत होवे है २२ श्लोक
मध्यमा मूलपर्यंतमायुरेखा च दृश्यते॥ चतुर्दश चतुर्विंशत्य
पुर्बलविनापुनं २३ अर्थ यदि कोई प्राणी के हस्त के अंगु
ली कनिष्ठा के मूल के नीचे सों प्रतीत होवे मध्यमा में मिली है
नही मध्यमा के नीचे एक अंगुली फरक होके मूल तले प्रतीत
होने सों वा प्राणी के आयु रेखा सों प्रतीत होता है कि चौबीस
२४ वा चौदह वर्ष १४ दो मिलके अठतीस वर्ष का ३८ आ
युरेखा सों आयु बलके नाश मरण का प्रतीत रेखा सों होता है २३

श्लोक आपुर्बलं भवेद्रेखा नामिकामूलसंस्थिता॥ निर्दश
चत्रिपष्ठी च अपर्बलं विनाशनम् २४ अर्थ यदि प्राणी
के हस्त के अनामिका अंगुली के मूल तले एक रेखा ऊपर सों
नीचे के अगर ही होवे तो एक रेखा मात्र तो निर्दश नाम तीस
३० वर्ष के आयुरेखा प्रतीत है यदि वैसे मात्र रेखा प्रती
त होवे तो त्रिषष्ठी साठ तीन त्रिसठ ६३ आयु के बल रेखा सों
प्रतीत होता है सो अनामिका के मूल के रेखा सों आयु जन्म का
हाल प्रतीत होता है २५ श्लोक आयुहीनं यथा रेखा पंचल्प
दीर्घं च दृश्यते जनाः सुखेदुःखेन चाल्प यमिर्त्यु न संशयः २६
अर्थ यदि प्राणी के हस्त में अल्प छोटी रेखा प्रतीत होवे तो आयु
अल्प थोड़ी जीवन का [illegible] छोटी दीर्घ बड़ी लं
बाय मान रेखा होय तो दीर्घ बड़े आयु के बल के देखना॥ यांते
रेखा सों पूर्णता [illegible] प्रतीत होने सों किंचित [illegible]
का होने के अल्प आयु का विचार के देखना यो प्रकार के रेखा
[illegible] जनमान का आयु [illegible]
ता है २७ श्लोक कर्ममध्ये स्थिता रेखा यदि तु चं [illegible]
पूर्णा [illegible] रेखा [illegible] २८ अर्थ हस्त के मध्य में
रेखा सो [illegible] है अंगुष्ठ अंगुली जो तर्जनी अंगुली के
[illegible] रेखा चलके [illegible] है एक तो मध्य हस्त के बीच सों पी
छे पहुंचे [illegible] घूमके जाता है॥ एक रेखा कनिष्ठका अं
गुली के सामने सों आयु रेखा के नीचे आ चलके हस्त में [illegible] है
[illegible] रेखा होवे आयुरेखा के नीचे के रेखा तो अपने [illegible]
ता के बीच में जनम लिया है॥ यदि पितृ रेखा में कहूं [illegible]
प्रतीत होवे तो जानीये की पराके बीच में जनम लिया है॥ यदि अं
गुष्ठ [illegible] मध्ये दो रेखा मिलके [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नासौ वड़ो प्रेम था । एकत्र संगा सदा यथा ॥ यदि पिरिथक रेखा प्र
तीत होवै तौ जानीये कि दोके संग सदा नहीं रहता है मैं मेवाल
रहिता होगा निश्चय सो जानिये यदि पिता की रेखा छोटा होके नी
चे के तीर्क मोड़ कर के चला हो तो पिता के अल्प आयु जानना
यदि मोटी रेखा लाल चिन्ह उपर हस्त मो प्रतीत होवै तौ बड़ो आ
यु पिता के जानिये ॥ यदि मात्रि रेखा जो पहुँचे के तरफ सो होके
ऊपर मो गया है सो अल्प पृष्ठ रेखा मो प्रयास न तो है तो माता के
आयु अल्प जानना ॥ यदि मोटा होके अरुणवर्ण पूर्ण प्रती
त होवे तौ बड़ो आयु माता के जानिये यदि माता पिता के दोउ रेखा कम
ध्य ऊपर भाग मो निश्चल होवै तो माता पिता दो स्वर्गवासी दे
वता होके देवलोक मो जाके संग स्वर्गवास करेंगे यह निश्च
य वाक्य है २६ श्लोक मात्रि रेखा करी च वरे के कप्रयमे वच
एकैकं पुन्य मादाय प्रयो रेखा चतुष्टयात २७ अर्थ पिता के
रेखा माता के रेखा दो हस्त मे प्रिथक २ होके हस्त मध्य प्रतीत
होवे है माता के रेखा तर्जनी अंगुष्ठ के मध्य सो चलके पहुँचे मो लग
रहती है पिता के रेखा तर्जनी अंगुष्ठ के मध्य मो निकस के आ
खा के नीचे सो चलके हस्त के वाम पार्श्व मो उठके जाना प्रतीत
होता है सो इ माता पिता के पुन्य के लेके माता के अंश वीर्य मात्र
रज वीर्य को लेके प्राणि मात्र संसारिक विषय भोग निमित्त श
रीर को धारण करे है सो इ माता पिता के रेखा दो हस्त के बीच मे प्र
तीत होता है २७ श्लोक बहु रेखा भवन्नल्ये पां स्वल्पायिवि
द्वन्नहीनता रेखायां वामन्नंश्यो (?) सामुद्र वचनं यथा २८
अर्थ याके हस्त मो माता पिता के रेखा के मध्य बहुत रेखा छो
टा छोटा रेखा आने को प्रतीत होता होवे तो निर्धन होने का
चिन्ह है शरीर सो नाना व्याधि रोग होने का चिन्ह मो प्रतीत है

यदि माता पिता के सूचक दो रेखा के मध्य मो अनेक अल्प सूक्ष्म
रेखा होवे तौ दरिद्र होने का चिन्ह मो प्रतीत होता है इसवास्ते
हस्त के मध्य पुष्ट पुष्ट रेखा यदि माता पिता के रेखा मध्ये प्रतीत
होवे त्रिकोण की वा अष्टकोण की वा चक्र अंकुश वा त्रिशूलादि को
का चिन्ह होवे तो बड़ो माननीय बुद्धिमान कुलीन होने का चिन्ह हो
ता है यह सो स्वाग समुद्र वासी भगवान श्री ब्रह्मा जी सो कहे
है सो सत्य वाक्य को निश्चय को माननीय है २८ श्लोक
अंगुलीनां प्रिथक् रेखा मान्यो निर्लिप्त पृथक् रेखा ह्रादशके सो
ख्यं धनधान्य प्रदायकं २९ अर्थ या प्राणी के दहिने हस्त को पां
चो अंगुलीयों के मध्य मध्य के तीन तीन रेखा को प्रिथक स्थान ना सो
यदि ला रह द्वादश रेखा होवे तो बड़ो सुबोध नी गुनी लायक होने
का चिन्ह मो प्रतीत होता है २९ श्लोक अंगुली नां प्रथरेखा मन्नेचे
तन्नयोदशः महादुःख महाक्लेशं सामुद्र वचनं यथा ३० अर्थ
याके दहिने हस्त के पांचो अंगुली वा के रेखा मो संपूर्ण रेखा गनना क
रने सो तेरह यदि रेखा मो प्रतीत होवे तो बड़ो दुःखी सो व्याधि
नाना लोभ धनहीनता को सूचना को देखावता है रेखा सो प्रतीत कराने
समुद्र सो भगवान कहे हैं ३० श्लोक रेखा पंचदश चौरः षोडशो धू
र्तवंचकः पापी सप्तदशो ज्ञेयो धर्मात्माष्टादशे भवेत् ३१ अर्थ याके दहि
ने हस्त के अंगुली के रेखा गनने सो यं पंद्रह होवे तो ॥ बड़ो चोर होने का
चिन्ह है यदि रेखा मो सोरह गनने सो प्रतीत होवे तो बड़ो धुर्त कर्म
मो ठगवारीयों मो बड़ो निपुन होने का लक्षण है वंचक ठग का र्म
मो बड़ो विख्यात होगा यदि सत्रह रेखा होय तो बड़ो पापी पापक
र्म मो बहुत उत्साह कर के पापियों का संग मो प्रीत कर के जन
म पर्यन्त नाना प्रकार के अनर्थ अपराध को पावने का चिन्ह मो
प्रतीत होवे है यदि दहिने हस्त के अंगुली मो अठारह रेखा प्रती

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नहोवै तो मानाप को रके धर्म मो प्रीति नाके आगे सान धर्म मे
ज्ञानी यह लोक मां धदिन होके प्रसिद्ध होय ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ उ
र्ध्वरेखा मध्ये न्या नौ गुणश्चौ लोकपूजितः नपत्नी विश्य नी हौ वै
महाभावैकविश्रवौ ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ बहिने हस्त के रेखा आदि
सो कन नई सहोने सो मान नी यही गा गुणवान बुद्धिमान हो,
य लोक में बड़ो सनमान आदर को पावै ॥ पदि अंगुलियौं
के रेखा मध्य सगनत सो होवै तो बड़े न पावै यो या के मो
त्रिपुन्ध धर्मात्मा होवै ॥ पदि एकाइ रेखा होवे ता बड़ो ज्ञा
नी महात्मा छिपा बड़ा मान जो यह लोक मो बड़ो ते ज्ञानी पा
न होके विद्यान संसार मेर होगा सो वन यथी ना नाना प्रकार
के सुख भोग के कारोडु र आनंद सो प्रभु रको लोका मो रहे के निर्दि
न परताप वान होवै का चिन्ह है ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ लक्षण रेखा के बीचं
गुली मह चिह्न चार चार चार चार गन लौकों ये जानो सुख को सार
आठ चौ बत्तीस है लक्षण जानो सोइ सुख दुःख संग आइ के मो
ग को रचन सोई ताको हाथ एक तो आहे नहो होवे वतीश सो प्रकोद
लो है इक मन जानि इस ताकि हाथ ते तीन हैं गनती हो पहुंली स
का नख न लक्षण सो संग्रह कर्म ते जाने इस ॥ चौपाई ॥ एक चक्र न
चाल वखाने दुइ चक्र गुण वना व हाथ में तीन चक्र वानो ध
धन होवै ॥ चारि चक्र सो सौ हूजन होवे ॥ पाच चक्र स लो वा वि
ला आय छ चक्र राका मन कुल सा सात चक्र व हु सुखे को स
आठ चक्र ते तीन न कंगाल व चक्र सो राजा करे दश चक्र तो
सिद्ध पद सुधरे ॥ अथ शंख विचार ॥ एक शंख न सुखी कराई ॥ द्वौ
य शंख दरिद्र के भाई ॥ त्रितिय शंख से निर्गुण व खाने ॥ चारि शं
ख ते गुणवन्त जाने ॥ पंच शंख ते निर्धन होई ॥ छ अवा शंख जो
इकोई ॥ दोहा ॥ सात आदि आन दश इते शंख न जाहोय ॥

सजा कहिये चन्द्रमा को बल लेपान वजाई ॥ अथ पोंछ का वि
चार ॥ चौपाई ॥ एक पोंछ गुण वनजन के वै दइ पोंछ कहत का
नहोवै त्रितिय सुपिथ धन संग्रह कर चार पोंछ यत्न गुण व
कुकरै ॥ दोहा ॥ चार पोंछ ते अधिक जो दशा येना पहिले होय ति
द्धि सिद्धि सो सुख के रसदा पुरुष जग होय ॥ चौपाई ॥ पहुँचे में
एक पड़ि होवै सुजन सो गम सुख ले सजन सो वै रेखा पहुँचे में दूजी
जाने ता का सुखी धन वन्त व खाने तीन रेखा पहुँचे में देखा
महासुखी व राज जस लेखा चारि रेखा पहुँचे में भाई बड़े भाग्य
दुःख नीज न जाई ॥ दोहा ॥ करतल रेखा जाहि के पहुँचे के मा
हि महाभोगी यह जानिये एह लक्षण हे जाहि रिद्धि सिद्धि क
ता सुखी वह जानो सब कोइ मणि वो चरल सम हे से राजा होइ
जाके वा में ति लजे समहा दुखी के लानि नित्य दीन दीन ना में रह क
है स सुन्द व खानि ॥ अथ नख के विचार ॥ अहूठी नख जो पुरुष को
भोगी सुख की खान पन्नाम घन वान बहु यो रो के पुरुष न म
न लक्षण ने जो जो पुरुष वो ता के हैं यकु शील महा दुःखी
जानिये सबरो है दुःशील से ते नख जो पुरुष को बड़ो
सो वह होई जवा पीड़ा व्यापे सदा सुखी न होवे सोई ॥
त वर्ण नख पुरुष को सो परे है बकाई ॥ न घर वाहर मो रहे
चिन्ता के वस होई ॥ लाल जपन नख पुरुष को ते जवंता सौ
होई ॥ महासुखी सो जानिये पुष्मल रूपा सब कोइ ॥ नख
हीन जो पुरुष को सो पापी जीव अज्ञानी सदा दुःखी वह
जानिये कहे सुसमुद्र व खानि ॥ अथ हस्त के विचार ॥ थान रा
के कार देखिये फण आकार सो होई धन संग्रह भोगी सुखी व
ह जानो सब कोइ थान रा को कार देखिये पन्ना कार सो होई
राज भोग सो नर के रेखा जानो सब कोय थान रा को कार देखिये

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

येमुण्डलाकारसोहोय नित्यगुलामीमोकोरेबहुज्ञानीसवकाव
अथभुजाकेविचार लंबीभुजाविचित्रनरछोटेभुजाकोदास॥
होयसुश्रीमीहावनोनहिस्तुतिवोप्रकाश लंबाभुजाजादाहिनीभु
हवांवडीभुजान वामभुजालंबीरहेमहाकापरपहज्ञान इतिश्री
शिवगौरीसंवादेतंत्रसामुद्रे हस्तरेखाशुभाशुभफलं अथलिं
गलक्षणं श्लोक महद्रिद्रपुरालोपिंलपलिंगोधनीनरः अपत्य
रहितोलोकेस्थूललिंगेधनोज्झितः ३३ अर्थ यहलोकमोलिंग
चारप्रकारहे सातअंगुलीकेअष्टअंगुलीकेनवअंगुलीके दश
अंगुलीकेरहचारकारहे कियदिसातअंगलीकेलिंगहोवेतोध
नीसुखीमानीपुत्रवानरहे परन्तुसूक्ष्मपनलादेखनेमोलिंगसो
फलउत्तमहे यदिसातअंगुलीकेलिंगहैपरन्तुवडोमोटाप्रतीत
होनेसोनिर्द्धनदरिद्रीदु:खीपुत्ररहितहोकेपतिकिंचितसुखदु:ख
भोग:करतेहुवेलोकमोविवाह शरीरमात्रकारक्षाकोराविशे
षकछुनहीप्रतापवंतहोगा ३३ श्लोक मेढेवामनकेचैव
स्यात्तनरहितोभवेत् वक्रे: न्याथापुत्रवान्स्यात्दारिद्रविन
म्यधः ३४ अर्थ जोअंडकोशकेऊपरसोलिंगयदिवावेतनर
अंडकेऊपरसोक्रककेवडेहोकेप्रतीतहोनेसोपुत्रविहून
नहीनतादु:खिहोनेकालक्षणलिंगमोप्रतीतहोताहे यदि
हिनेतरफकेअंडकोशपरक्रककेलिंगवडेहोनेसोप्रतीतहो
वपुत्रवानधनवानसुखोमानीलोकमोप्रतापीविदितहोवेयदि
योअंडकेवीचसोवडेहोकेनीचेकेतरफसोक्रुककेटेढाहोके
लिंगप्रतीतहोनेसोनिर्द्धनहोनेकाचिन्हहैपुत्रवानहोगा प
रन्तुअन्नकातोटारहेगा दरिद्रीहोगा यदिदोअंडकेवीच
सोसोमनसूधालवेहोके वडोलिंगहोवतोसुखीहोनेका
चिन्हलिंगमोप्रतीतहोहे ३४ श्लोक अल्पतनपीलिंगे

शिरालेचसुखोनरः स्थूलंग्रथितंलिंगेभवेतपुत्रादिसंयुत:
३५ अर्थ यदिछोटालिंगहोवे परन्तुलिंगकेऊपरसोशिर
हपनिसोमिलाहोवे गांठहरूतनहोवेजोलिंगवडेमोशिर
नाडीजडीहोवेप्रतीहोनेसोभीमोटाभीजोलिंगहोपरन्तु
लिंगकेऊपरकेचारोतरफकेगिरहग्रंथिसोयुक्तरहेने
सोसुखीधनीपुत्रादिकोसेसंपन्नहोकेलोकमोसुखीहोने
कालिंगमोप्रतीहोवेहे ३५ [illegible] अथ्या
य [illegible] श्लोक दीर्घलिंगेनदारिद्रंस्थूललिंगेनिर्द्धन:॥
कृशलिंगेनसौभाग्यंह्रस्वलिंगेनभूपती: ३६ अर्थ यदिद
शअंगुलीकेप्रमाणलिंगहोवेतोनिर्द्धनहोय स्थूलवडोमो
टालिंगहोनेसोनिर्द्धनदरिद्रीहोनेकाचिन्हहे पतलेकृ
शलिंगहोनेसोसौभाग्यसुखीहोगा यदिअल्पछोटालिंग
केऊपरग्रंथिअरुलालवर्णप्रतीतहोवे सूक्ष्मयत
नेलिंगसोयुक्तहोनेसोराजाहोनेकालक्षणहे ऐसेलक्ष
णमिलेतोराजाअवश्यहोताहीहे ३६ श्लोक कर्कशे
कठिनेलिंगे:परदाररत:सदा रमतेचनदादासीभिर्नि
नोभवतिध्रुवं॥ ३७ अर्थ याकेलिंगमोवडोकडोप
नाकठोरताकठिनताप्रतीतहोवेतो परस्त्रीकेसंगम
रमणकरेगा सदादासीवेश्याकेसंगरमणभोगकरते
हुवेनिर्द्धनहोनेकालिंगमोचिन्हप्रतीहोताहे ॥३७
श्लोक कृशलिंगेनसूक्ष्मेणरक्तलिंगेनभूपति:॥प
रस्त्रीरमतेनित्यंनारीनांवल्लभोभवेत्॥ ३८ अर्थ या
केछोटालिंगहोवेपरन्तुसूक्ष्मयतनलादेखनेसोप्रतीत
हे यौवनलालवर्णलिंगकेऊपरसोप्रतीतहोनेसोभूपति
राजाहोगा॥परन्तुपरस्त्रीवेश्याकुलटाहोरिणीवेभिचारिणीअनेक

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सुंदरी पर स्त्रीयों के संग भोग करि दुखेवडो होजनो के भोगादे
ने सो प्रिय वहु प्रसन्न स्त्रीयों का आनंद दाता होगा ३८ दोहा रूथ
लींगेन कोन हमने सोन सगना अनंगुल चद्दिव्यकन्यकया:
पतिर्भवेत् ३९ अर्थ याप्राणीके लींग कह होय ॥ अर्थात् बडो
पन लो देखने में प्रतीत होवे यालींग के ऊपर मोरगक वर्ण अर्थो
त् लाल वर्ण दे खने में प्रतीत होने से ऊ नाम सुंदरी सर्व गुना
संयुक्ता दिव्यां गनादिव्य सुंदरी कन्या के पति स्वामी होके ना
ना प्रकार के नाना विभव के सुख भोग करके गो धने यर्थी न लोक
में सुखी से भी होके हैं ॥ ३९ इति श्रीमिश्रप्रकाश संवादे तं
त्र सामुद्रिके लींग शुभाशुभ वर्णनम् अथ ललाट वर्णनं श्लो
क ऊर्ध्वा रेखा दिशुलेः पं बैलैलाटे विषमेस्तथा निर्द्धनो धन
वन्तश्च सदृशसंस्थैर्नरः ४० अर्थ याप्राणीके ऊर्ध्व ललाट
होवे ललाट के ऊपर मांय दि ऊंच ऊंचा ऊपर के चढके प्रगट
प्रगट पांच के चिन्ह प्रतीत होवे कि म्या ललाट के बीच में
हो तो याप्राणी न होवे अथ वा ललाट के ऊपर मो रेखा
चंद्र के सदृश रेख प्रतीत होने से निर्द्धन के वश भोजन सहै मो
रनु वडो धनी सुखी होगा ॥ संसार में वडो मान नीय प्राणी
होगा ४० श्लोक आचार्याः शुक्तिविशालैः शिरालैः पा
पकारिणः ऊनाभिः शराभिस्तु ललाटिकाभिर्द्धनेश्वराः ४१
अर्थ याप्राणीके ललाट के ऊपर शुक्ति का मास सीपी के स
ह सरेखा के समान नाडी सिरा प्रतीत होने से आचार्य साधु
आणी शिरा भी कमें षदना के लोक में वंचक भक्त होके र
हेगा ॥ परन्तु पापही कर्म के कारण से वा के प्रीति होवेगा ॥
या यदि ललाट पर ऊंचे ऊंचे प्रगट रेखा होवे ॥ स्वस्तिक कम
लदल के सदृश नाडी के चिन्ह प्रतीत होवे तो वडो धनी या में श्रेष्ठ धने

श्वर होके लोक में विख्यात होगा ४१ श्लोक निर्मल ल
टैर्विद्धि हि क्रूरकर्मरतस्तथा ॥ संपृष्टैश्च ललाटै स्तु कृपणा
ऊन्नतैर्नृपा ४२ अर्थ याप्राणी का ललाट में निमनति
चा विच में लाल प्रतीत होय तो वाप्राणी वधक रबि का जी
व है यदि नीचा ललाट वाला प्राणी जीवे तो जीवन पर्यं
त दुष्ट कर्म करा शुभाव पाय वुद्धि होवे लोक में विदित होवे
गा यदि श्रेष्ठ ललाट हो रूप गुण होने को वृद्धि होयगा ॥ यदि
ऊंचा ललाट होय तो राजा होने का चिन्ह होय ४२ श्लोक ल
लाटे यस्य दृश्यन्ते तिस्रो रेखा मनुः शतवर्षाणि षष्ठ्यन्ते चतस्र
भिरायुः पंचनवंमयं ४३ अर्थ याप्राणीके ललाट के ऊ
पर मोः तीनों रेखा ऊरू अन्य प्रगट प्रतीत होने से एक सौ साठ वर्ष
का रेखा मो प्रतीत होता है ॥ यदि ललाट पर प्रगट चार हो य ता
में श्रेष्ठ होयगा ॥ यदि ललाट में पांच रेखा होय तो नवे पांच
पंचानवे पाच वर्ष कम एक सौ वर्ष का आयु जीवने का प्र ती
त रेखा में होता है ॥ श्लोक अरेखायुर्नवतिर्विच्छिन्नाभि
श्चायुः स्वला: ॥ के शांतो यगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ४
अर्थ याप्राणीके ललाट के ऊपर कोई एक रेखा न होवे
य तो नवे वर्ष का आयु जानिए यदि ललाट के ऊपर बहुत
रेखा छिन्नभिन्न प्रतीत हो य तो सो प्राणी युक्त लंल पट पर हो
पराधन चोरावने का भोग करण का सद्दा सद्दा मन में चोरना
होने का लक्षण है ॥ यदि कोई एक रेखा ललाट के ऊपर के
श वाल के गड मूल के प्रगट रेखा प्रतीत होय तो अस्सी वर्ष का
आयु जीवन लाभ होके संसार में मूर्ख कर्म करता या क
रेगा ४४ श्लोक पंचभिः पंचभिः लेखाभिः पंचाद्वशद्भूमि
स्तथा ॥ चत्वारिंशच्च वक्राभिर्भिन्नाभिः ग्रन्थिः लगनगाभिर्मि ४५

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अर्थ याकेललाटपरपांचदशरेखाछिन्नभिन्नप्रतीतहो
ययदिश्मारहींरेखाहोययदिछवरेखाहोययदिबहुतरेखाहो
यगनतेमेठीकनहिंमालुमहोयतोएतनेरेखासोचालीसस
वर्षकाआयुललाटरेखासोप्रतीतहोहे यदिललाटकेऊप
रटेढाटेढाहोकेएकरेखाभ्रिकुटीकेऊपरप्रतीतहोयतो
तीसवर्षकाआयुरेखासोप्रतीतहोहै ६५ श्लोक विंशति
वी:सवत्सराभिरायुःक्षुद्राभिरल्पकंतमिथरालेदतिमेभ्रुवो
श्चाललाटके ६६ याप्राणीकेललाटकोरेखावामभागमेंत्रि
शूलहोय॥त्रिशूलटेढाटेढारेखाओछीठहोयतोवाअसीवर्ष
काआयुप्रतीतहोहे यदिभ्रिकुटीकऊपरकोरेखामोटाहो
इकेदूजकेचंद्रमाकेसाहृशरेखप्रतीतहोयतोपरिपूर्णआ
यु एकशततीसवर्षकेप्रतीहोहे॥ यदिभ्रिकुटीकेऊपररेखान
होऔयाकेचंद्रमासाहृशहोय॥योनहीमोटीरेखाहोयअ
तिसूक्ष्महोयतोअतिअल्पआयुरेखामेप्रतीतहोहै ६६
श्लोक शुभमर्द्धेंदुसंस्थानमत्युग्रमादलीमध्यं ह्ययतो
नामविचिन्हललाटेशुभदायक ६७ अर्थ याप्राणीके
ललाटमध्यभ्रिकुटीकेऊपरएकरेखाअर्द्धचंद्रमाकेस
दृश यदिऊंचीरेखाप्रतीतहोवेयदिऊंचललाटहोवेय
दिललाटमध्येरोमरहितरेखाप्रतीतहोवे॥यदिभ्रिकुटिमध्य
रोमभिलानहीहोवेतोराजाहोवेवडोरम्योमध्यमोमनक
रेकाचिन्हशुभप्रतीहोहे ६७ इतिश्रीसामुद्रिकेललला
टेललाटशुभाशुभवर्णनं अथयोनलक्षण श्लोक
शुभःकमठपृष्ठाभोगजस्कंधोपमोभगः वामोन्नतश्चेत्क
न्याजःपुत्रजोदक्षिणोन्नतः ६८ अर्थ यास्त्रीकेयोनअ
र्थात्भगकमठकछुवाछुवेकेपृष्ठकेसमानभगः॥॥

ऊंचाहोनेसोउत्तमश्रेष्ठभगकेलक्षणहै यदिगजहस्ती
केकांधकेसमानऊंचयोनिहोयतोश्रेष्ठहै यदियोनिकेऊ
पररेखावामभागमेऊंचाप्रतीतहोनेसोवोहयोनिसोकन्याका
उत्पत्तिविशेषहोनेकाचिन्हहै॥यदियोनिकेऊपरदहि
नेतरफऊंचाप्रतीतहोवेतोपुत्रविशेषहोनेकालक्षण
है ६८ श्लोक आश्वत्थमाकूर्मपृष्ठः स्थूलश्लिष्टः संहतःपृ
थुः तुंगःकमलवर्णाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृति ६९
अर्थ यास्त्रीकीयोनिकेऊपरसोवीलारोवांस्त्रीकेरो
मस्वल्पसू॥अल्पअल्पभिन्नभिन्नछोटछोटभ्रूवरमपर
वारप्रतीतहोयतोयोनीश्रेष्ठहोय॥यदीयोनीकूर्मपृ
ष्ठसीकेष्ठीतरफसंपुटसीलाहोरामोटादलहोके
ऊंचाप्रतीतहोकेकमलपुष्पकेसमानसंपुटशुभसुं
दरदेखनेसोप्रतीतहोनेसोश्रेष्ठयोनीकाचिन्हहैयदी
अश्वत्थपीपलपत्रकेसमानयोनीऊंचाहोकेप्रतीत
होनेसोउत्तमस्थूलशुभदायककालक्षणहै ६९ श्लो
क कुरंगखुररूपोयःचुल्लिहकोदरसंनिभः रोमशोवि
ताम्रःस्मरहृत्योनिर्दुर्भगः ७० अर्थ यानारीकेयो
निकुरंगमिर्गकेखुरकीसहृसहोयययदिचुल्लिहचूल्ह
केउदरपेटकेसहृसहोय॥यदिवकुतसंघनवालहो
यऊंचाऊंचाहोययदियोनिकामुखसथलहोकेपक्का
डिमफलकेसहृसफूटिराहाहोवेदेखनेसोभीतरकेमास
कालाश्यामवर्णदेखनेसोवडोदुर्भाग्यदुःखअशुभकेश
केदायकयोनिकालक्षणप्रतीतहोहै ७० शंखावर्तोभ
वेयस्याःसागर्भेमिहनेछति॥विपिटःकर्परकारःक्लिष्टःकरोपद
क्षीभगा ७१ अर्थ यानारीकेयोनशंखकेसमानहरकतापफ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मोलइकातरफपतलाप्रतीतहोनेसो॥गर्भकानहीधारणक
रनकाप्रतीतीहै वंध्याहोनेकायोनिमेचिन्हप्रतीतयदिविपल
वहुतिलालमुखप्रतीतहोविलपराकेसमानदेखनेमेप्रतीत
होसोलक्षणयोनिकाकिंकरीवासीमेमुकीदौर्द्दुःखहो
नेकायालीचिन्हमेसूचनअशुभअमंगलप्रतीहोहै ५१ अ
थ नासिकाकंटलक्षण श्लोक वंशवानसपत्राभेगजेरी
मोक्षनासिका॥विकठः कुटिलाकारीलम्बागलकण्ठाशुभ
५२ अर्थ यास्त्रीकेवांस केपत्रकेसमानकिम्वा॥वेत
केपत्रकेसमानऊंचनासिकाहोवे॥किम्वागजहस्ती
केरोमकेअहसकेसरीमनासिकाकेऊपरहोयकिम्वा
॥वडोअयंवारकुटिलम्वायमानऊंचालाकंठहोनेसोए
हचिन्हस्त्रीकाशरीरमेअशुभअमंगलकोसूचनकरवता
५२ श्लोक पुंखनामाकृतियोनिलम्वावर्तीचकीर्ति
नरुपाकुनायेन्वावर्तगर्भेश्यास्प्रकीर्तिता ५३ अ
र्थ यास्त्रीकेपुंखवानाभीकेसमानयोनिहोनेसोऊहस्त्री
रतसन्तानकन्यापुत्रकेउत्पत्तिकरावेनेवालीऊहयोनि
मेमानेगर्भहोनेकासिथरहनेकास्थाननहीहै ५४ इतियो
निलक्षण अथकांखलक्षण श्लोक कक्षाण्वलोम्ने
त्वानुगंधिन्युद्वेगमिकाअन्यथार्थहोनानाममोनिःखरचा
रके ५५ अर्थ यास्त्रीकेकिम्वापुरुषकेकक्षानामकाख
कारवामेअगर्थपीपलकेपत्रकेसदृशहोनेसोऊभफल
है॥यदिकांखानीसुगंधनसहोय ऊजुऊ बींका चटेहुरोम
प्रतीतहोवेतोवडोअष्टशूलदायकलक्षणहै यदिपीय
लेरो पत्रकेसमाकंखानहोहोवेसुगंधकंखामेनहीहोमतो
ऊंचेरोमनहीहोयतोकहकंखामेफलेवालीदुःखकोदेवाव

मेहोनालहै ऊखामफलनहीहै॥ह्यकाराफलअमनोमया
गहै ५४ पुनर्भुजालक्षणं श्लोक निर्मांसौचेनमगनाल्बौ
शिप्रौ चविपुलौभुजौ ऋज्वानुलौविनौवाहू ह्तो पीनौवृषप्प
रे ५५ अर्थ यास्त्रीकेभुजाकेऊपरमेमासथोरप्रतीतहै
॥योवसववडोअष्टमोटाभुजाहोनेसोंदुःखदायकहै॥यदि
जानु॥घोदूयर्यतलंवापमानहोयवाहूपुरुसकोहोयतो
वडेउत्तमअष्टभुजाहोकेनानाप्रकारकेससारकामेमगसुख
कारोवलाभुजामहाराजहोवेमेप्रगटहोयगा ५५ श्लोक
निःश्वानारोमशौदुर्लौभुजौदारिद्रदायकौअरोमकोमुखि
नौश्रेष्ठौकारिकासमौ ५६ अर्थ याकेभुजाकेऊपरवहुतरो
महोयअलपछोटेछोटेभुजाहोनेसोदारिद्रदुःखकेफलदा
यकअशुभभुजानेलक्षणहै॥यदिस्त्रीकेसुंदकेफल
लेवायमानअलपथोरोरोमवालेभुजासुखेहोनेवालक्षण
मेप्रतीतहैकीअष्टभुजाकहीरहैजामेथोरेरोमहोयरो
मामप्रतीतहोयलंवायमानहोयसोईभुजाअष्टसुखफल
देहै ५६ इतिभुजालक्षणं अथजंघलक्षणं श्लोक
अल्परोमयुताःश्रेष्ठाः जंघाहंसिकरीवमारोमैकेकंकूप
केष्वाशपानांमहात्मना ५७ अर्थ याकेजंघेकेअ
रमेअल्पथोरसेमहीनाम्मेजंघाअष्टसुखभोगकेदायक
है॥यदिस्त्रीकेसुंडकेसमानऊपरमेटाहै॥नीचेसोंटे
अष्टसुंडकेसमानचढावउतारवजंघाहोयतोअष्टसुखके
देनेवालाहोहै जंघेकेऊपरमेएकरोमकेश्रीद्रमाएकए
कहोहोयरामतोवडोग्यानमहाराजकेचिन्हमेजंघाकेफ
लसोमहाराज्यसुखेश्वर्यमेगवेह्वायतारामकेषोद्रश्या
रमोदोदेप्रतीतहोयतोवडोपंडितज्ञानीशास्त्रमतदुद्धिमान

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हाने कालक्षणाजंघेमो रोमवाने सो पंडित होहै॥ दोदो
रोमवारवरजंघामो सपूर्णहोने सो वाप्राणी संपूर्णवेदांत
केपढनेवाला अत्र आख्यायानिषदाविकतस्मसोति महाबा
का के अर्थके ज्ञाता वडो महापुरुष अर्हसज्ञानी होनेका चिन्ह
है ५७ श्लोक रोमत्रयं दरिद्राणां रोगोनिर्मांसजान्वकम्
हादरिद्रजं वृत्तं सुतैरोम चतुर्थके ५८ अर्थ याकेजंघे
के ऊपर रोमत्रय होतिन रोम एक जमिलके होयतो दारिद्र
दुःखरोगकेदायक जंघाहै यदि मांसरहित जंघेमो प्रतीत होय
यतो दुःखही के दायके होयहै॥ यदिचार चार रोम एकत्र
होयतो वडो दारिद्रताकु भोग करनेवाला प्राणी जंघेके रोम
वाहोनेसों दुःखही को भोगे रोग यामो नहीं संदेह जाननो॥
५८ इति जंघेरोमलक्षणाफलं॥ अथ चरणलक्षणं॥ श्लो
क निगुढगुल्फौ पाणि तौ यमकान्ति तलौ शुभौ॥ अस्वेदि
नौ मृदुतलौ मतस्यांकस करांकितौ ५९ अर्थ ॥याप्राणी
के चरणतलेगुढगुल्फरएडी पाणिश्लक्ष्ण होय कमलके समान
सुंदरदत्तले प्रतीत होय अस्वेदा यपिना चरणमो नहीं है
य सो कोमल होने सो श्रेष्ठफल देहै॥ याके चरणतले मत
स्य छत्रीके चिन्ह होय तो वडो राज्यभोगको दाता होहै यदि म
कर अंकुश चन्ह होय तो वडो प्रतापी सुखी होके नानाप्र
कारके वाहन पर चलनेका चिन्ह है वह प्राणी वडो श्रेष्ठ सुखवे
यदि मा ५९ श्लोक वज्रांकज हलचिन्हौ चरणौ याः यादेपद
स्थितौ॥ राज्यवर्तीनौ तु भार्ये याम भोगप्रदायकौ ६० अ
र्थ याके चरणतले चक्रके चिन्ह होय यदि कमलका चिन्ह
होय यदि हल लांगलका चिन्ह हो यतो पुरुष राजा होय यदि स्त्री
नी होय यदि दाशीके चरणमो रहै [illegible]

होय राज्यसुखभोगको अवश्यही भोगैगा ६० श्लोक जंघे च
रोमहीने सुवृत्ते विशिरे शुभे॥ अनल्वणं संधिदेशे सम जानुद्व
यं शुभं ६१ अर्थ यास्त्रीके जंघे के ऊपर रोम वाल न होय रहैतो
सो श्रेष्ठ जंघा है याके जंघेमो नाडी नहीं प्रतीत होय तो श्रेष्ठ है
दो जंघाके संधि मिलनस्थान मो यदि नहात नाडीका चिन्ह न हो
है तो श्रेष्ठ है या समान वरावर दो जंघा होने सो वडो श्रेष्ठ संताना
दिकासुखको दायक जंघा है ६१ श्लोक ऊरू करीकराकारौ
मो च समौ शुभौ रोमजपौ चनारीणां महादुःखप्रदायकौ ६२ अ
र्थ यास्त्रीके जंघे हस्तीके सूंढके समान होय तो श्रेष्ठ है यदि रोम
नहीं जंघेके ऊपर मो स्त्रीयोंका होय तो वडो श्रेष्ठफल धनधान्यपु
त्रकलत्रसंपुत्रसुखके दायक अरोमजंघा होहै॥ यदि स्त्रीयोंके
जंघेके ऊपर मो रोम वहुत होय तो वडो दुःखलोक केदेनेवाला
जंघेमो कथा शुभ प्रतीत होहै ६२ अथगुह्यलक्षणं श्लोक अ
श्वत्थपत्रसदृशं विपुलं गुह्यमुत्तमं पद्मकोशप्रतिबिंबं रेंगुह्यं चारु
मुनीश्वराः ६३ अर्थ याके गुह्यस्थान॥ गुह्यमार्ग॥ अश्वत्थपी
पलके पत्रके समान देखनेसों प्रतीत होय किंवा कमलपुष्पके
संपुटके सदृश प्रतीत होने सें स्त्री किंवा पुरुषदोके शुभ अश्वत्थ
हृदय मार्गमों प्रतीत है॥ यदि इह दो चिन्ह सो दोय गुह्य गुह्
य मार्ग होय तो अव्यय फलको दायक है नहीं देहै कीतु लोभाही
को देहै ६४ अथ मर्दानलक्षणं श्लोक आप्तिललाटकं
स्त्रीसुखसुसी रतं शुभं गूढमणिश्च शुभ मंदोनितंब सुगुह्यमा
मः ६४ अर्थ स्त्रीलोगके जंघाको ललाट यदि कूर्म वा छत्रके
पिष्टके समान होय तो वडो श्रेष्ठफल देहै योनाके नीचे दोन
रफके मांस वडो ऊच होय तो वडो श्रेष्ठफल है॥ स्त्रीयोंके लक्ष
हीमोन॥ ऊच होने सो पुत्रादिक संपूर्ण सुखके देनेवाला है॥ य

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ष्टि स्त्रीके बहुतछोटा स्तननहीं यके नीचेके दवा होय स्तनके ऊपर
मोटामवो पहोय तो स्त्रीकासंतानादिकोंकासुखनहीं होय वाल
क्षणमो प्रतीहोयहै नाभीलक्षण ६४ विस्तीर्णमांसोयविताय
स्मिाविपुलाशुभानाभिः प्रदक्षिणावर्तामध्यंस्त्रिवलिशोभनं ६५ अ
र्थ स्त्रीयोंकेनाभिकेऊपरचारोंतरफसोऊचामांसहोयनाभिके
त्रीवली॥यहैवडोहोय नाभीवडोगंभीरहोयतौवडोअष्ट
सुखीसंपतिहोयनाभीयदिदक्षिण दहिनावर्त॥नामदहिने
तरफसोघूमकेप्रतीतहोय॥नाभीको॥भौनरोमश्रीवलीहोयतौ
वडोसुखऐश्वर्यसोसंपूर्णादिकोंकोमोथवडोअष्टसुखमोगहे
नेकाचिन्हहै ६५ श्लोक अरोमवेल्लनापीनापीनोघनाथवि
मोघुभोस्निदधोवाके अश्माअरोमोरसंकेशुभे ६६ याप्राणीके
स्तनमोरोमनहींहोय॥योवडोऊचासमानहोय मिलाजडहोय
शीनमोटाहोयतोअष्टफलनहींयहै॥कंठकोमलहोय॥कम्बुग्रीवेवं
समानकंठसोऊपमफलहोहै याकेऊपरछातीकेऊपरोमन
होहोयतोअष्टफलकोदायकवडोसुखभोगकेकरणेवालाहोवे
है॥६६ अथमुखवर्णन श्लोक आरतावधरोअष्टौमांसलवर्तु
लंसुखदं कुंदपुष्पसमादंताभाषाभिंनकोकिलासम ६७ अर्थ
याप्राणीमुखकेनीचेकेषोटूरूपसमान आजालालवर्णके
सोअष्टफलहै पोटकेऊपरमासविशेषमोटदलहोवे
वर्तुलाकारगोलमुखहोनेसोअष्टफलकोदेहै॥याकुंदपु
ष्पकेपुष्पसमानदंतसुंदरजिनकाप्रतीतहोनेसोवडोसु
खनानाप्रकारकेभोगकरणा दंतअहसुंदरहोनेसोभोजन
सोवडोसुखदायकहोहै योजाके बोलनेसोअष्टवचनको
किलाकेस्वरकेसमाननमधुरशब्दमुखमोहोनेसोऊपमसु
खकोदेनेवालासोमुखहोहै ६८ श्लोक नासिकायद्यु

न्नासमपूटहंसशब्दसुखो चहनासासमपटाच्छोणातुच्छि
राणमा ६८ अर्थ याकेमुखदक्षिणावर्तहोयवडोप्रेमयुत
कोमलहंसकेशब्दकेसमानमुखकेबोलनहोनेसोवडो
अष्टसुखमेंभोगकेदायक॥वहसुखशब्दमोप्रतीतिहो
है नासिकायाकेसमानदोसपूटवरावरप्रतीतहै॥अच्छ
नासिकामध्येअहणलालवर्णनासिकाछिद्रहोनेसोंवडो
अष्टफलदेनेवालीनासिकावाअहणवर्णवालीहोवेहै ६८
श्लोक नीलोत्पलनिभचक्षुर्नीसालयोनलंबकोनप्रिथु
लीलेंदुनिमोमिवोचापष्ठललाटके ६९ अर्थ याकेनील
श्यामकमलकेसमाननरूपहोयनासिकाकेजडसेंलगन
लायाकेचलाहोयदोकर्णकेसामनेसोवहुतलंबायमान
हो यदिहोयतोवडोअष्टनेत्रमोअष्टताफलदेवनेसोभा
ग्यताहैकी॥कोचिनलालवर्णनेत्रनकामध्येहोनेसोउत्त
मफलकोदेहै योबालचंद्रमा द्वितीयाकेचंद्रसमानभ्र
कुटीहोयवहुतवडोमुखननहींहोयकिंचितधनुषकेसमा
नहोय॥भ्रिकुटीललाटकेऊपरमोसुंदरप्रतीतहोनेसोवडो
अष्टफलकेदेनेवालाहै ६९ श्लोक शुभमर्द्धेंदुसंस्था
मत्युतगमाद्लीमपूं आमामलकर्णयुगंसमंसिद्धसमा
नं ७० अर्थ याकेकर्णदुय॥वालचंद्रद्वितियाके चंद्र
माकेसमानहोय॥वडोऊंचाकर्णदूयहोय॥रोमनहीं
होय॥मलणसमतानहींहोयमृदुकोमलहोयतोरहि
न्हकर्णदूयसमानहोनेसोंवडोअष्टफलकोदेनेवाला
कर्णहोयहै ७० श्लोक ललितगंधानीलाश्वमिदचोमूर्द्ध
जाःकुंचितैकजाश्रीणांसमसिरःअष्टयादपाणिलेलि
ता ७१ अर्थ यामाणीके॥केशस्निग्धानाम॥वडोस्नि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दरा॥ कोमल त्रिकोन होय॥ मीन॥ श्याम नील वर्णके समान
होय॥ त्रिज्वित योरा कुटिल जैसा॥ ऊपर जो वो सो होय तो व
डोश्रेष्ट फल देहै॥ विशेषते॥ स्त्रीयों के॥ शिरवाव रहीना
कष्ट है॥ चरण हस्त हृदय समान वरावर होने सो स्त्रीयों के
ऊायम फर्ये है ७१ अथ हस्त पद्मना चिन्ह दर्शनं श्लोक
वाजिकुंजरस्त्रीवृक्षयूपेषुयवतोमरैः ध्वजचामरमाला
भिः शैलकुंडलवेदिभिः ७२ अर्थ याप्राणिके महस्त म
ध्ये॥ किंवा चरण मध्ये॥ स्त्रीके वाममो॥ पुरुषके॥ दाहिनेमो
॥ इही चिन्ह की रेखा होय तो श्रेष्ठ फल है॥ घोडाके चिन्ह॥ ह
स्तिके चिन्ह कल्प वृक्षाके चिन्ह॥ यज्ञ कुंडके सामने॥ यज्ञस्तं
भके चिन्ह पर्वतके चिन्ह॥ तोमरके चिन्ह॥ ध्वजाके चिन्ह॥ चाम
रके चिन्ह मालाके चिन्ह॥ पर्वतके चिन्ह॥ कुंडलके चिन्ह॥
यज्ञ वेदीके चिन्ह॥ एह चिन्ह पदिरूप पूर्ण लक्षण होय तो श्री
लक्ष्मी नारायण के अवतारके लक्षण सो वडो चक्रवर्ती राजा
के महस्त पद मो चिन्ह होहै यदि एक हू चिन्ह प्रतीत होय तो वडोश्र
फल को देने वाला इह समे चिन्ह है श्लोक शंखातपत्रपद्मे
मत्स्यस्वस्तिक सद्रूपैः लक्षणैरंकुशाद्यैश्च स्त्रियः स्युः राजवल्ल
भ ७३ अर्थ याके हस्त चरणमो शंख छत्र कमल युः युमत
सुछवि पताका॥ ऊर्ध्व मरथ अंकुश यह ने लक्षणतम हि है तो
तो पुरुष राजा होहै स्त्री रानी होहै वाम हस्त चरण स्त्रीके दख
न दाहिने हस्त चरण पुरुषको देखनो यह होम सबचिन्ह सो संसार
सो सुख होने का॥ सूचक लक्षण॥ विधि प्रसा प्राणी योंके हस्त
चरण मो लिखे है ७३ श्लोक निगूढ मणिबंधो च पद्मगर्भो
पमौकरौ नतिम तुंनो नत स्त्रीणां भवेतः करतले शुभं ७४
अर्थ याके हस्त चरणके मोट होय॥ मणिबंधा नाम॥ प

हुंचा॥ मोटा होय मांस सेपुरा हा होय॥ कमलके पुःपका समान अ
ग्रिको मल॥ त्वके भीतर मो जे सा प्रतीत होय ऐसा हस्त होने सों वडो ऊ
चो नहीं होय॥ अंगुली नीचा न होय॥ समान हस्त होने सों स्त्रीयों
का वडो भाग्य के देखाव में वालों यह चिन्ह सों प्रतीत होवे है एही रे
खा सों राज्य भोग को प्राप्ति होहै ७४ श्लोक रेखा मिलितां लू विधवा
कुर्यात् संभोगिनो स्त्रियं॥ रेखा युग्मा त्वं तरलग्न नाम सुखमो मप्र च सौ
भा ७५ अर्थ या स्त्रीके हस्तको रेखा मिलके दो रेखा संयुक्त प्रतीत हो
य यदि अंगुष्ठ तर्जनी॥ दोके मध्य स्थान मो जो दो रेखा॥ वडो पुरुष ही
के चलाहोय मो ई रेखा यदि जडाले मिल रहा हो यतो स्त्री काटडो भा
ग्य होहै विधवा नहो है॥ अपने पतिके संगमों नाना प्रकार का भो
ग सुखको रेखी॥ दो रेखा एक अमिल रहने सों सुख भोगको सब वा
प्राणीको होवे है ७५ श्लोक रेखा पाव मणि बंधो या गता म
ध्यं गुलीकरे॥ गता मणितल पा च योई पाद तले स्थिता ७६
अर्थ याप्राणीके॥ मणिबंध नाम॥ पहुंचेके जड सो आरंभ ऊर्ध
के ऊपर मो चलाके मध्यमा अंगुलीके मूल ले जडाले मिलके प्र
तीत जो रेखा है॥ वो ही रेखा को॥ सामुद्रिक शास्त्र मों ऊर्ध्व रेखा
नाम कहे है॥ सोई ऊर्ध्व रेखा॥ हस्त मे होय॥ किंवा॥ चर
ण मों होय तो ऊर्ध्व रेखा होने सो नाना प्रकार के सुख भोग हो
नेका सूचना ऊर्ध्व रेखा सों प्रतीत होहै ७६ श्लोक स्त्री
णां सुखं तथा समाप्त राज्य यच सुखाय च॥ पुत्र पौत्रादि संप
त्त्या चोर्ध्व रेखा सुखप्रदा ७७ अर्थ ऊर्ध्व रेखा
हस्त मो होय॥ ता संपूर्ण फल है॥ यदि चरणमो है तो सं
पूर्ण राज्य सुख भोग विभव पुत्र पौत्रादिक सो संयुक्त हो
के इस लोकमो वडो सुखी होके॥ रहे गा ऊर्ध्व रेखा
युक्त प्राणी अवश्य सुखी होने का चिन्ह है ७७ श्लोक

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कनिष्ठामूलरेखानुकुर्य्यो स्त्रैव शतायुषं ॥ अनामिकामध्य
मायामं नराल्यनतासती ७८ अर्थ याप्राणीके कनिष्ठि
छोटी अंगुलीके मूल ॥ जडमें ॥ एककोई छोटीरेखाप्रतीत
होयतौ एकशत ॥ एकसववर्षकी आयुजीवनेकारणहो
तीहे ॥ यदि अनामिका ॥ यो मध्यमा अंगुलीके मध्यस्थान
॥ एकरेखाकोई ऊपरसो चलके ॥ नीचेकीतरफमोगिरहो
यतौ यह रेखास्त्रीके हस्तमोरहनेसो पतिव्रतासतीस्त्राभाग्य
वतीहोनेकालक्षणहे ॥ यदिपुरषकाहोयतौ वहपुरुषधर्म
शीलमंत्रवादीसुखीधनीहोयालोकमोप्रसिद्धहोकेनाना
कारकेसुखभोगकरेगा ७८ श्लोक ऊनाऊनापुंग्रंक्रये
तरेखायागुष्ठमूलगाहकहन्तःपुन्नामन्यतापृसमदायरि
तिता ७९ अर्थ अंगुष्ठकेनीचेकेरेखामेयदिछोटाछि
न्नभिन्नप्रतीतहोयतौ अल्पथोरआपुप्रतीतहोहैयदि अं
गुष्ठके मूलतलेपूर्णरेखाहोयतौ पूर्णआपुप्रतीतहोहै अं
गुष्ठकेमूलकेनीचेमोजोतनेरेखाहै ॥ सोसवमोटामोटा
वेलदेरेखा ॥ पुत्रहोनेकारणहै छोटेछोटेरेखायतलीरेख
स्त्रीकन्याहोनेकाचिन्हहैजोजाहै ७९ श्लोक अल्पीयु
षलघुष्टिस्त्रादीर्घोच्छिन्नामहापषेशुभंतुलक्षणंस्त्रीणा
प्रोक्तं नशुभमन्यथा ८० अर्थ अंगुष्ठकेनीचेकेरेखा
सवमोदेखनाथोराआयुवालकके होनमेधकेरेखा सो छि
न्नभिन्नमालुमहोगा यदियडीरेखाहोकेछिन्नहोयतौ अ
आयुजीवनेकाप्रतीतहोहै ॥ एहीसवेशुभलक्षणस्त्रीयों
कामोहस्तमोहोनेसोश्रेष्ठफलहै यदिएहचिन्हनहोहा
तौ एफलजाकहाहैसोनहीहोनायोयहै औरप्रकारफल
वृथाचिन्हसोहोगा ८० श्लोक कनिष्ठिकाकानामिक

वायस्यानमष्टस्तेमहीं अंगुष्ठवामनानीव्रजनीकुलटाचसा
८१ अर्थ यास्त्रीके ॥ कनिष्ठनामाचरणकेछोटे अंगुलीयोंछोटी
अंगुलीकेपासकेअनामिका अंगुली एहीदोपदयदिपृथ्वीमें
ऊपर ऊंचेचलनेसोप्रतीहोकीन्या अंगुष्ठवडोअंगुलीकेऊ
परसोचढकेतर्जनीअंगुलीहोयतौ वह स्त्रीकुलटापरपुरु
षकासंगमोभोगकरणेवालीऔररणीहोनेकालक्षणमोप्रती
तहोहै ८१ श्लोक ऊर्द्धुद्गांभापंडिकमंजंघेचातिशिराल
के ॥ रोमसमःचातिमासेचकुंभाकारेतयोदरं ८२ अर्थ याना
रीकेजंघेमोऊपरकीतरफवडोमोटाप्रतीतहोयजाघमोनहो
छिराशीरप्रतीतहोयजंघेमेवहतरोमहोयतौ ॥ जंघेमोमांस
वहुतप्रतीतहोयकुंभ ॥ घडेकेसमान ॥ याके उदरपेटहोय
तौ यतनीलक्षणस्त्रीका अशुभदेनेवालाहै ८२ श्लोक
वामवर्तनिमग्नमल्पदुःखितानाचगुहयकं गीवाहस्वचयो
तिवादीर्घापापचकुलक्षय: ८३ अर्थ यास्त्रीके ॥ वामवर्त
नाभीहोय ॥ वामवर्त्तगुहय छोटागुह्यहोय छोटानाभीहो
यग्रीवाकंधेहोययों निमग्न ॥ वडोलंबायमानहोयतोवंशन
होहोनेकाचिन्हहै ८३ श्लोक मिघुलयाप्रचंडस्त्रियःसु
तोश्रसंग्रयःकेकरपिंगलेनेत्रेश्यावेलोलक्षणासती ८४ अ
र्थ यानारीके ॥ वडोमोटाकपोलमलगल्लाहोयसोवडोक
लहो ॥ दुष्टवाक्यवालीहोगी यानारीकेनेत्रमो ॥ हरिद्रावर्ण
होय ॥ मर्जारी ॥ विल्लीकेनेत्रकेसमाननहोययदिनीचानेत्र
होय यदिचंचलनेत्रहोय ॥ चपलताअंगवालीनारी वे
भिचारिणीहोयहै दुष्टवचनकेकहनेवालीहोहै ८४
श्लोक ॥ स्त्रीकूपगंडयोस्मेसाधुवव्यभिचारिणिमलेविनीस्व
लोटेचदेवरंदंतिचामना ८५ अर्थ यानारीकेकपोल ॥ म

लके ऊपर रोम श्यामता कौच्छ्रो प्रतीत होय तौ यह व्यभिचारी
णी पर पुरुष संग मे भोग करणेवाली होहै निश्चय॥ या नारीके च
डौ लंबायमान ललाट होय तौ अपनो स्वामीको छोटे भ्राता नाम
जो देवर है ताहि देवरको मारणेवाली होनेका चिन्ह हो प्रतीत
होवेहै ८५ श्लोक ऊदरे श्वसुरं हंति हंति शिफ चौ भ्रुवोः या
तुरमो तरोम्हे स्यान्त शुभावो दुंरे वहि॥ ८६ अर्थ या नारि
के ऊदर मे श्यामता होय॥ बडो ऊदर होय तौ अपने श्वसुरको मा
रणेवाली होवेहै॥ यदि योष्ट ऊर्द्ध ऊपरके बडा होय तौ॥ पति
के मारनेवाली होवेहै॥ या नारीको ऊपर वार रोम होय तौ कष्ट
अशुभ है॥ मातावंश॥ पितावंश श्वसुरवंश त्रयको दुःख देवे
वाली होहै ८६ श्लोक स्तनौ सरोमावशुभौ दीर्घचूचिविषमौ
तथा॥ करालविषमा दंताः क्लेशाय च भयाय च ८७ अर्थ
या नारीके स्तनके ऊपर मो रोम होय तौ बडो अशुभ है॥ या नारी
के॥ कठोरदूचि विषमा॥ बडे छोटे यदि दंत बडो बडो होय॥ स
मान बराबर न होय तौ॥ बडो दुःख के देनेका अशुभ लक्ष
ण है॥ दुःखदेके बडो भय त्रासको देनेवाली होवेहै ८७
श्लोक चौर्याय कृष्णमांसा स्याद्दीर्घा मृत्युश्मश्रुम वैक्रपादस्य
पैहै स्त्री स्वकृकका कादिस्तनिभिः ८८ अर्थ या नारीके द
लके दन्तके नीचे मो मांस ऊंचा ऊंचा ऊंचा प्रतीत होने सो
चोरकर्म मो चतुर होगी॥ यदि दंत बडो बडो॥ विम्बादे होल
बायमान होने सौं अपने सो अपने स्वामीको मृत्युको देगी प
ति देहि॥ विधवा होनेको लक्षण मो प्रतीत होहै यदि काकके
समान किम्वा हकके समान गृध्रके समान हसल कष्ट प्रतीत होसो
पतिविहूनताके लक्षणसूचन होहै ८८ श्लोक स्त्रियाले
विषमैः शुष्कैर्वित हीनामवंति हि॥ दुःखिताया निन

पतिविहूनताके लक्षणसूचन होहै ८८ श्लोक स्त्रियाले वि
षमैः शुष्कैर्वित हीनामवंति हि॥ दुःखिता पापनता वक्र
ऊर्द्ध नाडी च ठाकिनी ८९ अर्थ या नारीके बहुत हस्व यदा
दिक अंग प्रत्यंग नो॥ बडो बडो मांस मो ठ नाडी प्रतीत होनेसे
धनहीन दरिद्र पापिनी दुःखानी कलही व्यभिचारिणी हो
नेका चिन्ह मो प्रतीत होहै ८९ श्लोक सुमध्ना तीन रोही
याकलहे हस्के श्रीनी स्त्रीपुरुषे षाः सह याश्वयत्राकारोयशु
पाललतः ९० अर्थ या नारीके ऊपरके योष्ठ बडो मो ठाढ
ल होके ऊचा होय॥ कोप मो रूक्ष रुखा रम वणी के पवके
बाल प्रतीत होय तौ॥ सोई नारी कलही होहै॥ कलह मो प्रति
कोहै॥ निश्चयाके भयंकर मालुम होवेहै सो कुलक्षीहीनि काल
क्षण है॥ यह संपूर्ण अशुभलक्षण नारीके अंगका निरूपन
किया है इति गारुडे स्त्रीलक्षणं श्लोक कनिष्ठा हि समाष्टि
त्यमध्यमा या मुच्या गता॥ षष्टि वर्षायुषं कुर्यात् पुरुषस्तु मा म
वं ९१ या प्राणीके हस्त मध्ये कनिष्ठिका अंगुली मो आरंभ
होके मध्यमा अंगुलिके मूल पर्यन्त रेखा एक बडो मो ठा जाने
सो साठि ६० वर्षके आयुर्जीवने को रेखा सूचन करेहै यामो
नहीं संशय जाननो यथार्थ है ९१ श्लोक पद्मपात्रे कुचिता
के ग्राः सुलंबपरिमण्डलं॥ नाभिश्च दक्षिणावर्तः श्वाक
न्या कुलवर्द्धनी ९२ अर्थ या नारीके मस्तकके केश कु
चित॥ किञ्चित टेढा होने मुखके ऊपर मो घूमके फपल जा
यतो उत्तम है यदि दक्षिणावर्त नाभिमण्डल होय तौ वह
कन्या अपनो कुलमात्रके बढावनेवाली सुखी होगी ९२
श्लोक पाचकांचनवर्णाभा रक्तहस्तकरोरुहः सहस्रेवे
पिनारीणांमवेमा चारिणी ९३ अर्थ या नारीके

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रकांचन वर्णके समान वर्ण होय यो हस्तचरण मध्ये रक्तवर्ण
लालकमलके समान अरुणवर्ण समान होने सों वा स्त्री हजार
हस्त्रीके मध्ये वडो धर्मशील वडो सुखी पुत्र यो आदिकों सोम
पत्न होके अपने पतिके ये रासों नाना प्रकारके सुख भोग करोगी
९३ श्लोक रक्तकेशा च या कन्या मण्डलाक्षी तु या भवेत्॥ अतो
रोमयोनन स्यानिपतितुःखभामिनी ९४ अर्थ यानारीके आरु
णअरुण वर्णके पाके रोम होय मंडलगोल नेत्र विल्लीके नमकेस
… वाली स्त्रीके स्वामी अवश्य मरे है॥ विधवा होके अजन्म
मरणपर्यन्त नाना प्रकारका दुःखके भोगवेगी ९४ श्लोक
पूर्णचंद्रमुखी कन्या वालसूर्य समप्रभा विशाल नेत्रा बिंबो
ष्ठी सा कन्या लभते सुखं ९५ अर्थ यानारीके मुख सुंदर पूर्णचन्द्र
माके सदृश गोल मुख होय॥ प्रातःकालके सूर्यके समान श
रीर सुंदर होय॥ वडो सुंदर विशाल लंबायमान नेत्र होय॥
ओष्ठपोष्ट रक्तवर्ण विंबके समान लाल यो ष्ट होने सों वडो सुख
…या कोकरणे वाली रानी होके नाना प्रकारके संपूर्ण सुखवि
चके भोग करेगी ९५ श्लोक रेखाभिर्वहुभिः क्लेशं स्वल्पाभि
र्दुनहीनता रक्ताभिः सुखमाप्नोति कृष्णाभिर्प्रेष्यतां व्र
जेत् ९६ अर्थ या प्राणी के हस्तकी रेखा वहुत होवो तो
होय ना दुःख होनेका चिन्ह है॥ यदि वह तो थोरे होवे तो
…होतो धनहीनता दरिद्री होनेका चिन्ह है॥ हस्तकी रेखा
अरुण॥ रक्तवर्ण होने सो सुखी होवे है॥ हस्तकी रेखा मोश्या
मता॥ कालावर्ण होने सो दुःखके प्राप्ति होनेका चिन्ह सो
प्रतीत होवे है ९६ श्लोक अंकुशं कुंडलं चक्रं यस्याः पा
णितले भवेत्। पुत्रं प्रसूयते नारी नरेन्द्रं लभते पतिं ९७ याना
रीके हस्त मध्ये अंकुशके चिन्ह होय तो वडी भाग्यवाली स्त्रीके

ष पुत्रके उत्पन्न करके राजाके संग विवाह होके वडी रानी
होके सुखी होवेगी श्लोक यस्याः स्तनौ रोमयुक्तौ वा रोम
युक्तौ य यो धरौ॥ उन्नतौ चाधरोष्ठौ च शीघ्रं मारयते पतिं ९८
अर्थ यानारीके दोउ स्तनोमें पेटके दोउ पाजर में वहुत रो
म होय॥ यदि स्तन या योधरके ऊपर रोम होय॥ यदि नीचे
के पोष्ट वडो मोटा दृष्टप्रतीत होय तो यह चिन्ह सो विधवा
होवेगी ९८ श्लोक यस्याः पाणितले रेखा प्राकारं तोरणं तथा
पि दासकुले जाता राज्ञीत्वमुपगच्छति ९९ अर्थ
यानारीके हस्त मध्ये प्राकार नामकोट रोम हलेका चिन्ह
होय तो॥ यदि दासकुलमें जन्मै है परंतु रानी होके वडे
सुखभोगको करेगी ९९ श्लोक ऊर्ध्वरेखा भवेद्यस्या
रोमराजी निरंतरं अपि राजकुले जाता दासित्वमुपगच्छति
१०० अर्थ यानारीका के ऊपर भो रोम के अधभाग मो यदि
कपिल वर्ण हरित वर्ण प्रतीत होय संपूर्ण रोमके अग्रभाग
पीतवर्ण होयतो वह स्त्री राजकुलमें पैदा भई है॥ यह
दासी होनेका चिन्ह सो प्रतीत होवे है १०० श्लोक मध्यमा
नामिकाङ्गुष्ठौ प्रथ्वीं यस्या न स्पृशन्ति चेत्॥ पतिं मारयते शीघ्रं स्वे
च्छया वर्तते १०१ यानारीके चरणके अनामिका अंगु
ली अंगुष्ठ अंगुली॥ पृथिवी सो ऊंचे होके प्रति होय ना यो
के मारके विधवा होके स्वतंत्र व्यभिचारिणी होके लोकमो दुः
खपाइ के रहेगी १०२ श्लोक यस्याः गमनमात्रेण भूमिकं
पो यजायते॥ पतिं मारयते शीघ्रं स्वेच्छाचारेण वर्तते १०२ अ
र्थ यानारीके प्रथम चलने सो वडो धमधम शब्द भूमिसो
प्रतीत कंपियता पृथ्वीको मालूम होने सो वह स्त्री अपने पति
के मारके विधवा होके व्यभिचारिणी परपुरुष सेवा सङ्ग …

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ग करणे वालो विरोली होवेगो १०२ श्लोक चक्षुस्नेहेन
सौभाग्यं दंतस्नेहेन भोजनं ॥ त्वचस्नेहेन शय्यां पदस्नेहेन
वाहनं १०२ अर्थ याप्राणीके नेत्रके स्नेह आवकृत अच्छे हे
तो वह बडो भाग्यवान होगा याके दन्तमें सुंदरता है वाके भोज
न वडो दिव्य पदारथको प्राप्ति होगा शरीरके सर्वांगत्वचाच
म वडो सुंदर कोमल प्रतीत होने सो पलङ्ग देय शोय्या ॥ दिव्य
आसनको प्राप्ति होगा ॥ चरणद्वयके सुंदर पद चरण होने
सो नाना प्रकारके वाहन रथ पालकी ॥ घोडा हस्ती दिव्य वाह
न असवारी प्राप्ति होहे १०३ श्लोक स्निग्धोन्नतौ ताम्रन
खौ नार्याश्च चरणौ शुभौ मत्स्यांकुशाब्जचिह्नौ च चक्रलांग
ललाञ्छितौ १०४ अर्थ यानारीके चरणदो वडो कोम
ल होय ॥ ऊंचे २ नख होय ॥ तामके समान रक्त वर्ण नखे
होय ॥ तो वडो श्रेष्ट फल होवे है ॥ यदि चरणमो ॥ मत्स्य मछ
रीके चिन्ह होय अंकुशके चिन्ह होय ॥ कमलके चिन्ह होय
चक्रके चिन्ह होय लाङ्गल हलका चिन्ह होय यदि एतनो चिन्ह
होय तो वडो भाग्य श्रेष्ट होहे ॥ यदि एतनो चिन्हमो कोई २ कहू
चिन्ह होने सो वडो भाग्यमानी स्त्रीलोकमें सुखी होके आनं
दसों संपूर्ण भोग करती सुखी रहेगा १०४ श्लोक अस्वेदि
नौ मृदुतलौ प्रशस्तौ चरणौ स्त्रियाः शुभे जंघे विरोमे च ऊरू हस्ति
करोपमौ १०५ अर्थ यानारीके चरणदोमें ॥ स्वेद गर्भप
सिना नहीं होय वडो कोमल प्रतीत होय तो उत्तम कलके
प्राप्त होवेगी सुंदर जंघे मा रोमरहित ॥ हस्तीके सुंडके सद
श सुंदर जंघेमो वडो श्रेष्ट फलके प्राप्ति होके स्त्री वडी सुखी
लोकेमो संपूर्ण सुखभोग करेगा १०५ श्लोक नाभिःप्रद
क्षा गंभीरा दक्षिणावर्तिका शुभा ॥ अरोमत्रिवलीनार्याः

र हृदयं नो रोमवर्जितौ १०६ अर्थ यानारीके नाभी श्रेष्ठ ऊ
त्तम गंभीर ॥ नीचा होय दहिना वर्त घूमा नाभिसिके प्रती
मतीत होय ॥ रोमके प्रसो रहित होके त्रिवली तीम ॥ पडी
नाभीके ऊपर होने सो श्रेष्ट फल होवेहे हृदय ॥ छाती मो
स्तन ॥ पयोधरके ऊपरमो रोम नहीं रहने सो वडो श्रेष्ट फल
कहे नेवाला लक्षण होवे है एही चिन्ह रहने सो स्त्रीके वडो
श्रेष्ट फलके भोग प्राप्ति होनेका लक्षण है १०६ श्लोक स्निग्धां
गुली ताम्रनखौ पादावुच्चौ शिरान्वितौ ॥ कूर्मोन्नतौ गूढगु
ल्फौ स्वप्नशाली नृपतेः स्मृतौ १०७ अर्थ याप्राणीके चरण
अंगुली संपूर्ण मिला होय छिद्र न हो प्रतीत होय चरणके म
खताम्र वर्ण होय चरणके ऊपरमो ऊंचा प्रतीत होके नाडी
सुंदर सुंदर ॥ नाडी प्रतीत होय कूर्म कछुवाके पीठके समान
चरणके ऊपर समोटा दल प्रतीत होय याप्राणी एडी चरणके ऊंचे
होय ॥ चरणके एडीके ऊपरमो दोन तरफके गुल्फ ऊंचा मास वडो म
सोर प्रतीत होने सों रहो संपूर्ण चरणके चिन्ह वडे महाराज नृप
तिके चरणमो चिन्ह होके ऐश्वर्य भोग विभवके प्राप्ति कार
णवाला चरणचिन्ह सो प्रतीत होहे १०७ श्लोक शूर्पकारौ
विरूक्षौ च वक्रौ च विरलांगुली कषायमहद्वशौ या दौर्भाग्य
गुणप्रकीर्तिता १०८ अर्थ याप्राणीके चरण वडो शूर्प
के समान होय देखने मो विरूप रूखर मालुम होय ॥ वाके
नख छोटे किञ्चित घूमा चरण होय निरल प्रिथक प्रिथक अं
गुली मध्ये रहने सों ॥ कणपडी हमड्डीके समान चरण लेख
प्रतीत होने सों एतनो चिन्ह होने सो दरिद्र दुःखी जनोके च
रणमो रूप मशूचक चरणचिन्ह सो प्रतीत होहे १०८ श्लोक
सद्वर्तौ चलितौ मुक्तौ स्तुत्यपतिः स्मृतः स्थूलगाविगुणी

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लिंगे स्त्रीपुत्रादिसंयुता १०९ अर्थ याप्राणीके येसा वकरणे के
समयमें मुत्रस्व करवा वधारा होय के दहिनीतरफमें जाइके परेतो
दहिनावर्त मुत्रकेपडने सें राजा होके राज्यमें मानके कर्ता होवेहै यदि
लिङ्गमें नहीं केलिङ्गके ऊपरमें गिरहौ होयप्रथिर्वेधनद्रलानेहैहो य
लिङ्गके ऊपरमें स्वावर्णे लालस्पष्टीतो तोहोने से वहुतपुत्र पौत्रादि
कोसें संपन्न होने के चिन्हहै १०९ श्लोक पुष्पगंधिप्रते
शुक्रे भवेद्राजा सुधार्मिकः मधुगंधयुतो वीर्ये धनसुखेक्रि
न्नर ११० अर्थ याप्राणीके वीर्यमें उत्तम पुष्पके सुगंधके
समान उत्तम सुगंध वो वीर्यमें प्रतीत होने सें राजा होने का चि
न्ह है याके वीर्यमें महतमधुके समान सुगन्ध होनिसे धं
नी होके लोकमें वडो सुखी धनपात्र होके लोक में विख्या
त सुयश वाला होवे प्रसिद्ध रहेगा ११० श्लोक पुत्राःशु
क्रेपुष्पगंधे तन्व शुक्रे च कन्यका ॥ मांस्ह में गीसां सगंधे
यद्दास्यान्मद्यगंधिनी १११ अर्थ याप्राणीके वीर्य
में उत्तम पुष्पके समान सुगन्ध प्रतीत होने से पुत्र पौत्र
दिकोंके उतपन्न कोहै भकोहै मयदि उत्तम पुष्पका ग
न्ध नहीं है ॥ मंदगंध होनेसें कन्याके उतपत्ति करेगा ॥
यदिवा यौमें मांसका गंध होयतो वडो सुखी भोगी होगा
यदि वीर्यमें मदिराके समान गन्ध होय तो भी वडो सुखी
भोग मानलोकमें रहेगा १११ श्लोक स्पारगन्धे वीरुद्रः
स्यात् दीर्घायुः श्री मे घृते समरस्रायु में गा मत्स्यालिमन
वस्याधनी किंमः ११२ अर्थ याप्राणीके वीर्यमें खार
गन्ध होवे तो दरिद्र होने का चिन्ह है याके मैथुन के स
में मोम का जो दुर्गंध तो दीर्घजीवी होने का चिन्ह है ॥ याके
स्त्रीमें समान वास होवे ऊंचा होवे ॥ धनवान होवे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

के स्त्री तो मोनी वा वालप्रतीत होवे तो निर्दुन होने का
स्पष्ट सें प्रतीत होवे है ११२ श्लोक इंदद्विकंप्रा
कविधाशुलं परिभाषितं ॥ श्रुत्वा धर्मा यदि सा च स्त्री कान
हिंति पंडितः ११३ अर्थ श्रीमहादेवजी ॥ श्रीपा
र्वती भगवतीजी सें कहे है ॥ को हे गिरिराजनंदिनी प्रिये
ह सामुद्रिक शास्त्र तो श्रीविष्णु भगवानने ॥ श्री मुख
सें कहाहै ॥ यह सामुद्रिक शास्त्र को पढिको ई प्राणी
स्वप्रकार याके अर्थ के धारण करे याको पढै ॥ पका
गी ॥ यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने से वा प्राणी बुद्धिमा
न पंडित होके सम्पूर्ण संसार के मध्ये नाना प्रकार का चिंता
त्याग करके सुखी होगा संपूर्ण कामना को पावेगा ११३
इति श्री नंदसामुद्रिक रागीरी सम्वादे संपूर्ण स्त्री पुरु
ष लक्षण शुभाशुभ कथनं समाप्तम् २० ८ १ राम
शङ्ख चन्द्राब्दे मार्गशीर्षसिते दले ॥ ह्लादस्यां चर
श्रीमघ पहुनाथेन मोदि तम ॥ श्रीयुक्त शास्त्रीय
नाथ मिश्र पण्डित मान्य वर्येण मुद्राङ्कितं प्रंथ सामुद्रि
कं समाप्तं ॥ ॥ ॥ यह पोथी सामुद्रिक सम्वत् १९२५ फागु
न दी ११ कोश्री मतरेगुल्लान मुहम्मदी क रवुदत्ताम मुन्शी
साहब अली साहब के सहस्स फरमाय श जनावस्वामी सुहर
रसाहब मदाहल मुहाममतेवई मैंकि छपी गई ॥

लिखी छेदालाल

॥ ने ॥





CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पाक्ष्यकेसोक्ष्यवितिविसैत्तौ मूर्धे (अमकाक्षकहन्युर्दं
विसमर्थे १ सामुयेकतोमाप्रनिविवपरेस्स निलेक्षेप
लाथनत्रैनिक्षयोग १ चिरशिकाविजेतोप्रवमनवि
नमनेहृष्यवहेमान्तुभिन २

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

24